ज्ञानामृत

नवम्बर, 1989 वर्ष 25 ❋ अंक 5 मूल्य 2.00

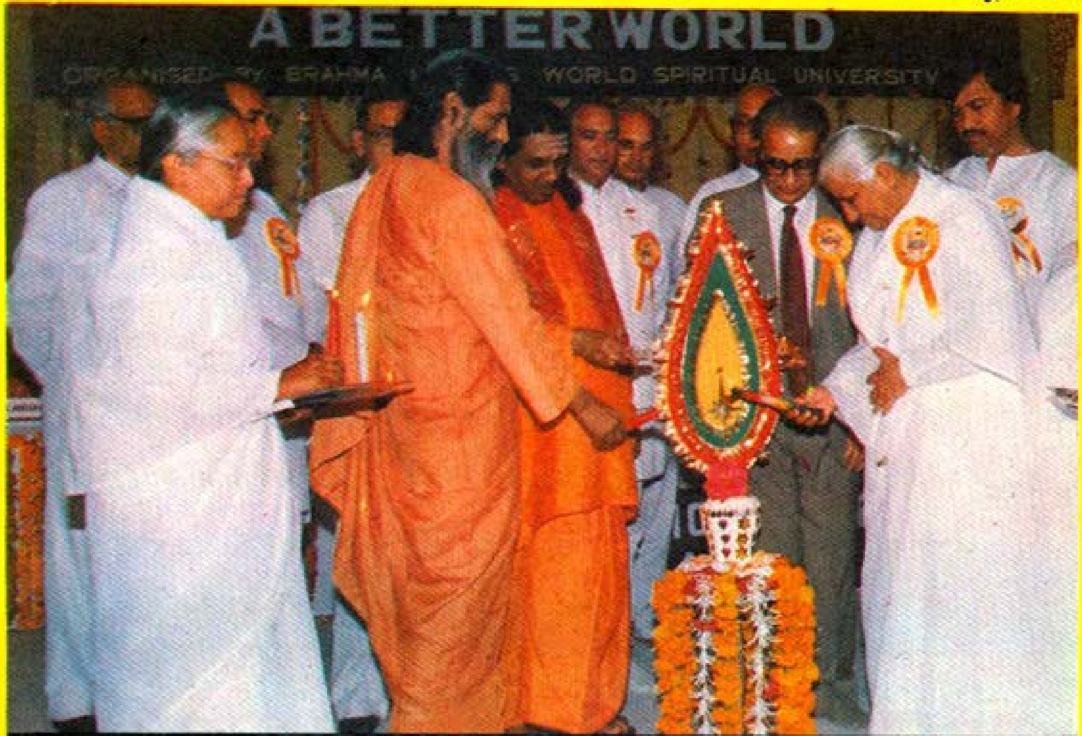

माउंट आबू: 'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार' महासम्मेलन का उद्घाटन दृश्य। ब्रह्माकुमारी दादी प्रकाशमणि जी, भ्राता टी.एन. चतुर्वेदी भारत सरकार के महालेखाकार एवं महापरीक्षक, भ्राता शान्तवीरा महास्वामी, बंगलौर, एम.एम. स्वामी हरिनारायणानंद जी, महासचिव भारत साधु समाज, नई दिल्ली दीप प्रज्जवलित करते हुए।

माउंट आबू: वैज्ञानिकों, तकनीकिज्ञों एवं आध्यात्मवेत्ताओं के महासम्मेलन का उद्घाटन दृश्य। भ्राता सनत मेहता, अध्यक्ष सरदार सरोवर नर्मदा निगम लि. गुजरात, भ्राता पी. चन्द्रशेखर, मन्त्री पंचायती राज, आ.प्र., भ्राता पी.आर. अय्यर, पूर्व निदेशक डनलप, इंडिया, भ्राता ए.के.डे. अध्यक्ष अणु शक्ति समन्वय बोर्ड, बम्बई, दादी प्रकाशमणि जी मुख्य प्रशासिका ब्र.कु.ई. विश्वविद्यालय दीप प्रज्जवलित करते हुए।

गुड़गांव : 'सुख शान्ति मेले' का उद्घाटन करते हुए भ्राता सीताराम सिंघल, मंत्री सांस्कृतिक एवं क्रीड़ा, हरियाणा तथा ब्र.कु. दादी हृदयमोहिनी जी, दादी रुकमाणि जी तथा अन्य।

भोपाल : टी.टी. नगर स्टेडियम में आयोजित नवदुर्गा की झांकी को हज़ारों लोगों ने देखा। मंच पर उपस्थित हैं भ्राता अर्जुन सिंह, पूर्व मुख्य मंत्री म. प्र., भ्राता विष्णु राजोरिया जी, भ्राता महेन्द्र कपूर, पार्श्व गायक, ब्र. कु. महेन्द्र तथा अन्य।

धुलिया : गणेशोत्सव के अवसर पर निकाली गई झांकी के लिये प्रथम प्राईज़ के रूप में ब्र.कु. रीता शील्ड लेते हुए। आनंद क्रिकेट क्लब के अध्यक्ष गिफ्ट दे रहे हैं।

गुड़गांव : 'सुख शान्ति मेले' के उद्घाटन के पश्चात् ब्र.कु. सुदर्शन जी भ्राता सीताराम सिंघल जी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए।

माउंट आबू: 'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार' महासम्मेलन में पधारे कुछ प्रतिनिधि मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणि, अतिरिक्त प्रशासिका दादी जानकी, सह-प्रशासिका दादी चन्द्रमणि तथा अन्य मुख्य ब्र.कु. भाई-बहिनों के साथ ग्रुप फोटो में।

माउंट आबू: 'वैज्ञानिकों, तकनीकिज्ञों तथा आध्यात्मवेत्ताओं' के महासम्मेलन में पधारे कुछ प्रतिनिधि ब्र.कु. दादी प्रकाशमणि, दादी जानकी, दादी हृदयमोहिनी तथा अन्य मुख्य ब्र.कु. भाई-बहिनों के साथ ग्रुप फोटों में।

Regd No. 10563/65-D, (E)—70

2.

3.

4.

5.

6

7.

1. **माऊंट आबू:** 'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार' सम्मेलन में अपने विचार प्रगट करते हुए भ्राता एल.के. अडवानी, अध्यक्ष भाजपा, ब्र.कु. दादी प्रकाशमणि जी तथा भ्राता टी.एन. चतुर्वेदी जी, भारत सरकार के महालेखाकार एवं महापरीक्षक। 2. **मॉस्को:** ब्र.कु. चक्रधारी तथा डॉ. ऊषा किरण, भ्राता एस.के. गंगोली भारतीय एम्बेसी में प्रथम सचिव, शिक्षा के साथ दिखाई दे रहे हैं। 3. ब्र.कु. चक्रधारी तथा ऊषा किरण 'मानव उत्थान क्लब' लेनिनग्राड में प्रवचन करने के पश्चात् क्लब के कुछ सदस्यों के साथ ग्रुप फोटो में। 4. **मॉस्को** में अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी स्कूल की निदेशक बहिन वगमोलवा लुडमिला को राजयोग पर समझाते हुए ब्र.कु. चक्रधारी तथा डॉ. ऊषा किरण। 5. **मॉस्को** में ब्र.कु. चक्रधारी, डॉ. ऊषा किरण तथा अन्य बच्चों के एक ग्रुप के साथ, जिन्होंने स्वागत समारोह में भाग लिया। 6. **भोपाल** में पार्श्व गायक भ्राता महेन्द्र कपूर तथा गायिका दीपमाला के दिव्य संगीत एवं साध्य गीत के सुअवसर पर ईश्वरीय उपहार देती हुई ब्र.कु. अवधेश तथा शैलम जी। 7. **माऊंट आबू:** 'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार' महासम्मेलन में इन्दौर के बच्चों द्वारा प्रस्तुत नृत्य नाटिका का एक दृश्य।

अमृत-सूची

१. सुखमय संसार के लिए परमात्मा के साथ दिल और दिमाग का सामंजस्य स्थापित करें	१
२. आवश्यकता ज्ञान-चक्षु की (सम्पादकीय)	२
३. आसुरी बुद्धि की योग्यता विनाशकारी है	४
४. विश्व को सुखमय बनाने के लिए शुभ संकल्प श्रेष्ठ आधार हैं	५
५. पत्रकार नारद नहीं, गणेश-सम बनें	६
६. मानव-एकता का आधार है—स्वधर्म की पहचान	७
७. स्वयं को सुधारो, जग सुधरेगा	८
८. आध्यात्मिकता और राजनीति के बैलैन्स से सुखमय संसार ला सकते हैं	८
९. राजयोग की शिक्षा द्वारा ही व्यवहारिक जीवन सम्भव	९
१०. पवित्रता एवं नैतिकता के विकास से विश्व शान्ति स्थापित हो सकती है	१०
११. आध्यात्मिकता ही मानव को धरती पर मानव की तरह चलना सिखा सकती है	११
१२. शिक्षाविद् कार्यशाला	१२
१३. समाचार-पत्र सकारात्मक समाचारों पर अधिक बल दें	१३
१४. धार्मिक नेताओं एवं धर्म वेत्ताओं का स्नेह मिलन	१४
१५. 'ओमशान्ति और वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना को व्यवहारिक जीवन में लाएं	१५
१६. सर्व के सहयोग से सुखमय संसार महासम्मेलन में पारित प्रस्ताव	१८
१७. विश्वशान्ति के लिए हमें आध्यात्मिकता का उपयोग करना है	१९
१८. बेहतर विश्व के निर्माण के लिए आध्यात्म एवं विज्ञान का समन्वय आवश्यक	२०
१९. आणविक शस्त्रों पर होने वाले खर्चों को कम कर विश्व के रचनात्मक कार्य में लगायें	१९
२०. चेतना, जीव और जगत् तथा उनकी उत्पत्ति	२२
२१. राजयोग द्वारा रचनात्मकता और कुशलता	२३
२२. वैज्ञानिक भी आत्मा को पहचानने का अनुसंधान करें	२३
२३. बेहतर दुनिया के निर्माण में विज्ञान और आध्यात्म परस्पर सहयोगी बनें	२५
२४. मिलन	२६
२५. आप मुरली से प्यार करो, तो मुर्लीधर आप से प्यार करेगा	२९
२६. एकाग्रता परिवर्तनकारी शक्ति है	३१

सुखमय संसार के लिए परमात्मा के साथ दिल और दिमाग का सामंजस्य स्थापित करें

☐ ब्र.कु. जानकी

माऊंट आबू: 28 सितम्बर। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के मुख्यालय के सभागृह में भारत एवं विदेशों से आए हुए 1500 से भी अधिक प्रतिनिधियों के मध्य सम्मेलन का शुभारम्भ हुआ। इस समारोह की अध्यक्षता करते हुए संस्था की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी जी ने कहा कि आज विश्व की मनुष्यात्माओं में भय और निराशा के अलावा कुछ और दृष्टिगोचर नहीं होता। आध्यात्मिकता का तो जैसे दिवाला ही निकल गया है। ऐसे समय पर विश्व रचयिता परमपिता परमात्मा विश्व को सुखमय बनाने की सुन्दर विधि से सर्व आत्माओं को अवगत करा रहा है। मानव-मस्तिष्क से दुर्गणों की समाप्ति एवं सद्गुणों का आह्वान कर, त्याग एवं तपस्वी मूर्त द्वारा विश्व में शुभभावना, शुभकामना के प्रकम्पन इस धरा को सुखमय संसार में परिवर्तित कर देंगे। अतएव उस परमपिता के साथ अपने दिल एवं दिमाग का सामंजस्य स्थापित कर अपने आदि एवं अनादि स्वरूप को प्रत्यक्षकर स्वयं का तथा विश्व का कल्याण करने का हर एक प्रयास करे, तो सुखमय संसार के आगमन में कोई देरी नहीं है।

मध्यप्रदेश के इन्दौर क्षेत्र के क्षेत्रीय संचालक ब्रह्माकुमार ओमप्रकाश जी ने सर्व का स्वागत करते हुए कहा कि कालचक्र की गति अनुसार वर्तमान दु:खमय संसार को सुखमय बनाने में विज्ञान ने अपना सहयोग प्रदान करते हुए मानव को अनेक प्रकार के साधन एवं सुविधाओं में वृद्धि तो की है लेकिन मानवीय मूल्यों को समाप्त कर दिया। अच्छे घर दिए परन्तु अच्छे परिवारों का निर्माण नहीं किया। विश्व में आवागमन की दूरी में कमी की, किन्तु दिलों की दूरी बढ़ा दी। इन्सानों की वृद्धि हुई लेकिन इन्सानियत खत्म हो गई। अतएव आज आध्यात्मिकता के द्वारा आपसी प्रेम, भाईचारा एवं परस्पर सहयोग की भावना ही इस विश्व को सुखमय बना सकती है।

भारत सरकार के महालेखाकार एवं महापरीक्षक माननीय टी.एन. चतुर्वेदी जी ने कहा कि समस्त विश्व एवं इसमें निवास करने वालों का जीवन उत्तमोत्तम हो ऐसे प्रयास की सफलता अनिवार्य है। इसमें सभी का कल्याण है।

भारत साधू समाज के जनरल सेक्रेटरी स्वामी हरिनारायणानंद जी ने कहा कि आज का सम्मेलन मानव जाति की सुरक्षा से जुड़ा हुआ है। भौतिकवाद से संसार अशान्त हो गया है। इस अन्तर्राष्ट्रीय संगठन के द्वारा संसार के अनेक राष्ट्रों में आध्यात्मिक ज्ञान एवं नैतिक विचारों का प्रसार किया जा रहा है जो कि संसार को संहार से बचा सकेगा।

इस समारोह में लंदन से ब्रह्माकुमारी जयन्ती, ऑस्ट्रेलिया से ब्रह्माकुमारी डॉ. निर्मला, यू.एस.ए. से ब्रह्माकुमारी मोहिनी, अफ्रीका से ब्रह्माकुमारी वेदान्ती, नई दिल्ली से इन्टरनेशनल स्प्रिचुअल एडवाइजरी बोर्ड के अध्यक्ष श्री श्री शान्तवीरा स्वामी जी, सच्चा बाबा आश्रम इलाहाबाद के श्री गोपाल स्वामी महाराज तथा हरिद्वार से श्री चेतनदेव कनखल के स्वामी परमानंदजी उदासीन ने भी सम्मेलन को सम्बोधित किया। सम्मेलन का संचालन दिल्ली से ब्रह्माकुमारी आशा बहिन ने किया। अन्त में सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। ☐

आवश्यकता ज्ञान-चक्षु की

हम अपने जीवन में अनुभव करते हैं कि अतीत का वर्तमान से और वर्तमान का भविष्य से नितान्त सम्बन्ध है। अतीत में किसी ने आम की गुठली को धरती में दबाया और सींचा था, वर्तमान में उसकी सुरक्षा और देख-भाल होती है और वह बढ़ रहा है और भविष्य में वह फल देगा। जैसे अतीत, वर्तमान और भविष्य का अविभाज्य सम्बन्ध है, वैसे ही बीज और फल का भी सम्बन्ध है। बीज अतीत का प्रतीक है और फल भविष्य का। आज जो फल हम देखते हैं, उससे उसके बीज का बोध होता है और जब हम बीज बोते हैं तो बोते समय ही हम जान लेते हैं कि ऐसा बीज होने से उसका फल क्या होगा। **इस प्रकार, अतीत, वर्तमान और भविष्य-तीनों को जानकर ही हम कर्म करते और सफल होते हैं। जब हम कर्म करते हैं तो उससे होने वाला भावी परिणाम हमें चर्म-चक्षुओं से दिखाई नहीं देता, बल्कि ज्ञान के चक्षु ही से दिखाई देता है। इसी प्रकार, किस बीज का क्या फल होगा—इसको भी हम वर्तमान में ज्ञान-चक्षु ही से देख सकते हैं। यदि मनुष्य को यह ज्ञान-चक्षु प्राप्त न हों तो वह कर्म करने में अक्षम होता है; वह कर्म के क्षेत्र में 'नयनहीन'** होता है। जैसे दृष्टि-विहीन व्यक्ति ठोकर खाता है और खड्डे में भी गिर जाता है उसी प्रकार ज्ञान-नेत्र से रहित व्यक्ति भी संसार में कर्म-गति को न जानने के कारण तथा अतीत, वर्तमान और भविष्य को न जानने के कारण चक्षुहीन व्यक्ति के समान ही होता है।

इसी ज्ञान-चक्षु के अभाव में आज सभी नर-नारी सुख-शान्ति को ढूँढने पर भी प्राप्त नहीं कर पा रहे है। वे न अपने अतीत या इतिहास को जानते हैं न ही अपने तथा संसार के भविष्य से परिचित हैं। जो कर्म वे कर रहे हैं, उसका क्या फल होगा—इसका उन्हें कोई बोध नहीं है। इसी कारण से ही तो आज संसार में अनेकानेक जटिल समस्याएँ हैं तथा अपार दुःख और अशान्ति भी व्याप्त है।

ज्ञान-चक्षु के बिना नैतिक मूल्यों की स्थायी धारणा कैसे?

आज हम लोगों को कहते हैं कि वे अपने जीवन में नैतिक एवं मानवी मूल्यों को धारण करें। परन्तु ज्ञान-चक्षु के बिना मनुष्य स्थायी रूप से इन मूल्यों को भी धारण नहीं कर सकता। संसार का इतिहास उपलब्ध है; मनुष्य उसे चर्म-चक्षुओं से पढ़ता भी है परन्तु ज्ञान-चक्षु न होने के कारण उसे यह मालूम नहीं होता कि सभ्यताओं और राष्ट्रों के उत्थान और पतन का कारण क्या था। ज्ञान-चक्षु के अभाव में वह अतीत को नहीं देख सकता। वह यह भी नहीं देख सकता कि उसका भविष्य उज्ज्वल किन कर्मों से बनेगा। इसलिए वह नैतिक एवं मानवी मूल्यों के महत्व को नहीं देख सकता। इसी कारण से ही तो मूल्यों के ह्रास हुआ है। यदि मनुष्य को मूल्यों में गिरावट आने से भविष्य का धूमिल होना दिखाई देता तो वह मूल्यों को गिरने ही क्यों देता? कौनसे दिव्यगुण रूपी बीज से कौन सा दिव्य गुण रूपी फल होगा—यदि मनुष्य को यह दिखाई दे जाय तो वह उन दिव्य गुणों को धारण क्यों नहीं करेगा?

इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए हमें चाहिये कि हम जन-जन को नैतिक मूल्यों को धारण करने के अतिरिक्त ज्ञान भी दें ताकि उनका ज्ञान-चक्षु खुले। उस से ही उन्हें जब यह दिखाई देगा कि अतीत में पतन इन मूल्यों के अभाव के कारण हुआ तब वे गुण स्वतः ही धारण करेंगे।

जानते हुए भी प्रेक्टिकल में न लाने का कारण क्या है?

हरेक व्यक्ति के जीवन में यह भी अनुभव है कि कई लोग जानते हुए भी नहीं जानते और देखते हुए भी नहीं देखते। आँखे खुली होने पर भी कई लोग ठोकर खाते हैं, सुनते हुए भी कुछ लोगों के पल्ले कुछ नहीं पड़ता और समझते हुए भी कई लोग काम बेसमझी ही का करते हैं। इसका कारण यही होता है कि आँख, कान और मस्तिष्क होने पर भी **उनका ध्यान कहीं और होता है** या उनमें देखने, सुनने या समझकर करने की **इच्छा का अभाव होता है**। अतः आज आवश्यकता इस बात की भी है कि मनुष्य का ध्यान इस बात की और आकर्षित किया जाय कि नैतिक मूल्यों की ज़रूरत क्यों और कितनी है। आज उनके मन में यह इच्छा पैदा करने की ज़रूरत है कि नैतिक मूल्य हमारे जीवन में हों ताकि हम सुख-शान्तिमय जीवन जी सकें। इस इच्छा और ध्यान की स्थिति को पैदा किये बिना नैतिक मूल्यों का नगाड़ा बजाना बहरे के आगे बीन बजाना है। किसी को भूख ही न लगी हो तो उसे खिलायें क्या? किसी को प्यास ही न लगी हो तो उसे पिलायेंगे क्या? कोई अमृत के महत्व को ही न जाने तो उसके लिये अमृत क्या है? इसलिये आज ज़रूरी है कि मनुष्य के मन में पहले यह जिज्ञासा तथा ज्ञान-पिपासा पैदा की जाय कि उसे ज्ञान-चक्षु प्राप्त हो।

ज्ञान-चक्षु के बिना युक्ति-युक्त योग भी नहीं लग सकता

मनुष्य को सहज राजयोग की शिक्षा देना भी ज़रूरी तो है परन्तु जब तक ज्ञान-नेत्र नहीं होगा तब तक मनुष्य न आत्मा को देख सकेगा न परमात्मा को, न परमधाम को और न प्रभु-प्रेम की आवश्यकता को, वह न कर्म-गति को देख सकेगा न योग से बनने वाले महान भविष्य को। तब वह योग लगायगा कैसे और उसमें योग लगाने की उत्कण्ठा क्यों होगी ? आज बार-बार कहने पर भी मनुष्य योग नहीं लगाता क्योंकि उसे योग के द्वारा बनने वाला भविष्य दिखाई नहीं देता और परमधाम तथा परमात्मा दिखाई ही नहीं देते। अतः नैतिक मूल्यों की तथा सहज राजयोग की चर्चा के साथ-साथ आज ज्ञान-चक्षु देने की भी आवश्यकता है ताकि मानव का योग लग सके और नैतिक उत्थान का पुरुषार्थ कर सके।

जगदीश

रांची : उषा बेलट्रान के सभागार में आयोजित विचार गोष्ठी में 'राजयोग से मानसिक तनाव पर नियन्त्रण' विषय पर बोलते हुए (बाएं से) ब्र० कु० ई० विश्वविद्यालय के मुख्य प्रवक्ता भ्राता जगदीश चन्द्र जी, उषा बेलट्रान में प्रबन्ध निदेशक भ्राता राणाप्रताप जी, ब्र० कु० निर्मला बहिन, ब्र० कु० प्रदीप जी।

तेज़पुर : दुर्गा पूजा उत्सव प्रदर्शनी का उद्घाटन दृश्य।

भुज-कच्छ : नवदुर्गा की झांकी का उद्घाटन दृश्य।

आसुरी बुद्धि की योग्यता विनाशकारी है

कई तथाकथित आधुनिक विचारों वाले मनुष्य पूछते हैं कि जब माँस, मदिरा, सिगरेट इत्यादि का खूब प्रयोग करने वाले वैज्ञानिक, ऐसे आश्चर्यजनक आविष्कार कर सकते हैं कि वे चन्द्रमा तक जा पहुँचे हैं, तो क्यों न यह समझा जाय कि बुद्धि के विकास अथवा उसकी योग्यता का—धर्म अर्थात् आचार आहार की पवित्रता से कोई सम्बन्ध नहीं है? वास्तव में यह तर्क विवेक-संगत नहीं है क्योंकि एक तो वैज्ञानिकों की बुद्धि का कारण उनके माँस, मदिरा इत्यादि का सेवन नहीं, बल्कि उनके अन्य अनेक गुण हैं। दूसरे बुद्धि की योग्यता और श्रेष्ठता—दो अलग बातें हैं, जिनमें महान अन्तर है। इसमें सन्देह नहीं कि वैज्ञानिकों की बुद्धि ने कमाल किया है। परन्तु मनुष्य की बुद्धि आसुरी है या दैवी, इसका निर्णय बुद्धि की योग्यता से नहीं बल्कि इसकी उपयोगिता से करना चाहिए। क्योंकि उल्टे रास्ते पर चलने चलाने वाली योग्यता तो अधिक ही हानिकारक सिद्ध होती है। आज आप देखते हैं कि अध्यात्म और दिव्यता से शून्य कलियुगी समाज के कलियुगी वैज्ञानिकों की बुद्धि का सारा झुकाव भौतिकवाद, भोग-विलास और निजि-स्वार्थ की सिद्धि की ओर ही है। परिणामस्वरूप, इस देहाभिमानी, आसुरी सम्प्रदाय ने अपनी योग्यता का दुरुपयोग करके ऐसे-ऐसे भयंकर परमाणु शस्त्र (Nuclear Weapons) तैयार किये हैं जिनके द्वारा शीघ्र ही इस पुरानी सृष्टि पर महाभारी विनाश होगा। कहावत भी प्रसिद्ध है कि—विनाशकाले विपरीत बुद्धि?—ऐसी बुद्धि किस काम की जो विनाश के निमित्त बने? माया अर्थात् काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार इन पाँच विकारों के वशीभूत हुए मनुष्य की बुद्धि तेज तो हो सकती है परन्तु उसको आसुरी शैतानी, विनाशकारी बुद्धि (Destructive Intellect) ही कहेंगे न कि दिव्य, श्रेष्ठ और निर्माणकारी बुद्धि, (Constructive Intellect) जिसके द्वारा मानव और समाज का कल्याण हो सके। आज तो भारतवासी ही उस सत्य को भूल चुके हैं कि सतयुग के अहिंसक, पावन, सोलह कला सम्पूर्ण और दिव्य बुद्धि वाले वैज्ञानिकों के विमान इत्यादि आविष्कार तो वर्तमान राकेटों इत्यादि से कहीं अधिक चकित कर देने वाले और त्रुटि रहित (Fool Proof) होते थे जो सर्वदा सम्पूर्ण और स्थाई सुख देने के साधन थे।

ले० ब्रह्माकुमारी विमला, आगरा

विश्व को सुखमय बनाने के लिए 'शुभ संकल्प, श्रेष्ठ विचार ही आधार हैं

□ टी.एन. चतुर्वेदी

माउंट आबू : 29 सितम्बर। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के मुख्यालय के विशाल सभागृह में देश एवं विदेश से आए हुए 1500 से भी अधिक प्रतिनिधियों के मध्य ''सर्व के सहयोग से सुखमय संसार सम्मेलन'' का उद्घाटन दीप प्रज्जवलित करके हुआ। सम्मेलन के मुख्य अतिथि भारत सरकार के महालेखाकार एवं महापरीक्षक माननीय टी.एन. चतुर्वेदी जी ने कहा कि आज के तनावपूर्ण और अशान्ति के वातावरण में शुभ संकल्प, भाईचारा तथा श्रेष्ठ विचार ही विश्व को बेहतर बनाने के लिए सबसे अधिक उपयोगी, सार्थक एवं सटीक हैं। आज वैज्ञानिक उपलब्धियों एवं भौतिक साधनों से मानव अपने को काफी प्रगतिशील समझने लगा है.वहीं दूसरी ओर बढ़ती हुई शस्त्रों की प्रतिस्पर्धा में वह स्वयं को असुरक्षित अनुभव कर रहा है। अतएव ऐसे समय पर सर्व के सहयोग से सुखमय संसार हेतु श्रेष्ठ विचार धारण करना एवं उस पर आचरण करना ही स्वयं में तथा समाज में आत्मविश्वास और सच्ची शान्ति पैदा कर सकता है और विश्व को अच्छा बनाने की दिशा में यही एक आधार है।

सम्मेलन की अध्यक्षा मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी दादी प्रकाशमणि जी ने कहा कि परमपिता परमात्मा शिव सर्व आत्माओं का कल्याणकारी एवं सर्व का उद्धारकर्ता, सर्व को सुख-शान्ति सम्पन्न बनने की प्रेरणा देता है। इसी उद्देश्य को दृष्टिगत रखते हुए ''सर्व के सहयोग से सुखमय संसार सम्मेलन'' का आयोजन किया गया है। गाया जाता है कि अति दुःख, ग्लानि एवं अति पतन के समय पर ही ऐसी शुभ प्रेरणा सबको प्राप्त होती है कि यह समय सर्व के उपकार करने का है। अतएव प्रत्येक मानव यह दृढ़ संकल्प कर ले कि मुझे स्वयं का उपकारी, सर्व का उपकारी एवं कल्याणकारी बनना है, ऐसे सच्चे दिल की भावना से यह विश्व सुखमय संसार में परिवर्तित हो ही जाएगा। इस सम्मेलन की सफलता में मानव उत्थान की सफलता का सूत्र समाया हुआ है।

भारत साधू समाज के महासचिव स्वामी हरिनारायणानंद जी ने सम्बोधित करते हुए कहा कि विश्व के वर्तमान संक्रमण काल में प्रत्येक व्यक्ति को, चाहे वह किसी भी धर्म को मानने वाला हो, अपने-अपने धर्म का, कर्त्तव्य का पालन करना आवश्यक है। धर्म मानव-जीवन का निरन्तर अभ्यास है, इससे भौतिक उन्नति का भी मार्ग प्रशस्त होता है। अतएव एकजुट होकर सभी मिलकर अपनी-अपनी शक्ति एवं साधन परमार्थ एवं धमार्थ के कार्य में लगावें तो विश्व की स्थिति बेहतर हो सकती है। नैतिक एवं सामाजिक न्याय का वातावरण समाज में निर्मित करें। आणविक शस्त्रों के निर्माण पर प्रतिबन्ध लगाकर रचनात्मक एवं कल्याणकारी कार्यों में समय एवं शक्ति लगायें।

संस्था के मुख्य प्रवक्ता ब्रह्माकुमार जगदीश चन्द्र जी ने कहा कि संसार की वर्तमान दशा के परिपेक्ष्य में यदि हम एक बेहतर दुनिया अथवा सुखमय संसार चाहते हैं तो हर व्यक्ति को अपने-आपको बदलने की प्रक्रिया स्वयं से आरम्भ करनी होगी। हर मानव का आंतरिक परिवर्तन ही संसार में नैतिक मूल्यों की अथवा मानवीय मूल्यों की पुनर्स्थापना करने में सहायक होगा।

इस सम्मेलन को श्री श्री शान्तवीरा महास्वामी, अध्यक्ष अन्तर्राष्ट्रीय आध्यात्मिक सलाहकार बोर्ड, नई दिल्ली, सम्मेलन के सेक्रेटरी जनरल ब्रह्माकुमार निर्वैर माउंट आबू, ऑस्ट्रेलिया से नीडहम कन्सलिया ग्रुप के चेयरमैन श्री ब्राथन बैकन ने भी सम्बोधित किया। कार्यक्रम का संचालन भोपाल के क्षेत्रीय निदेशक ब्रह्माकुमार महेन्द्र जी ने किया। कार्यक्रम का शुभारम्भ चन्डीगढ़ की ब्रह्माकुमारी अस्मिता एण्ड पार्टी के दिव्यगान से हुआ। □

माउंट आबू: 'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार' सम्मेलन में भाग लेने वाले मुख्य प्रतिनिधियों का स्वागत समारोह दृश्य।

पत्रकार नारद नहीं, गणेश-सम बनें

माउंट आबू: 29 सितम्बर। मीडिया कार्यशाला में उपस्थित प्रचार-प्रसार के साधनों से संबंधित प्रतिनिधियों को संबोधित करते हुए ब्रह्माकुमारी संस्था की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी ने अपने आशीर्वचन में कहा कि परमपिता परमात्मा ज्ञान के सागर तथा सारी सृष्टि के बीजरूप (रचयिता) हैं। उनके लिए गायन भी है कि जिसकी रचना इतनी सुन्दर वह कितना सुन्दर होगा। इसलिए परमात्मा शिव को सत्यम् शिवम् सुन्दरम् भी कहते हैं। दादी जी ने आगे कहा कि समाचार-पत्र वाले एक पुल का कार्य करते हैं। जिन्होंने दूरी को समाप्त कर दिया है। सभी के दिलों को समीप लाने का कार्य अगर वे करेंगे और स्नेह और सहयोग का वातावरण अपने माध्यम द्वारा बनाएंगे तो अवश्य शीघ्र ही यह संसार सुखमय बन जावेगा। उन्होंने दृढ़ विश्वास प्रकट किया कि मीडिया वाले अपनी कलम से कमाल करेंगे और लोगों के दिलों को जोड़कर उन्हें कमल-समान जीवन बनाने की प्रेरणा देंगे। दादी जी ने उन्हें विघ्न विनाशक बनने वाले गणेश जी का भी टाइटल दिया।

इन्दौर ज़ोन में स्थित सेवाकेंद्रों के इन्चार्ज ब्रह्माकुमार ओमप्रकाश जी ने कहा कि प्रसार व प्रचार के साधनों द्वारा यह संसार एक छोटा परिवार बन गया है। अतः उन्हें चाहिए कि सनसनीखेज़ समाचार प्रकाशित न करके वे रचनात्मक तरीके से ही समाचार प्रकाशित करेंगे तो समाज का कल्याण कर सकेंगे और सुखमय संसार बनाने में अपना योगदान दे सकेंगे। उन्होंने आगे कहा जैसे चटपटी वस्तुएं खाने में स्वादिष्ट होती हैं लेकिन स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होती हैं। ऐसे ही चटपटे लेख भले ही लोगों का ध्यान आकर्षित करते हैं लेकिन स्वस्थ समाज के निर्माण में बाधक होते हैं। अतः उन्हें चाहिए कि अपने स्वरूप में टिककर लेख लिखेंगे तो जीवन रूपी पुष्प में आध्यात्मिकता रूपी सुगंधि फैला सकेंगे।

महेश श्रीवास्तव सम्पादक 'दैनिक भास्कर' भोपाल ने कहा कि पत्रकार बन्धुओं को नारद का काम न करके जैसा कि दादी जी ने कहा कि गणेश बनना चाहिए अर्थात् आध्यात्मवादी बनना चाहिए। उन्हें नमक-मिर्च लगाकर समाचार नहीं देने चाहिएं और सच्ची खबर इस तरीके से प्रकाशित करनी चाहिए जो लोगों में तनाव पैदा न हो।

वासुदेव मेहता, सह-सम्पादक, सन्देश, अहमदाबाद ने कहा कि समाचार-पत्र इतना शक्तिशाली साधन है जो समाज का ढांचा बदल सकता है। यह साधन सही तरीके से अपनाया जाए तो नैतिक उत्थान करने में भी समर्थ है। लेकिन वर्तमान समय उनके सामने बन्धन की कुछ सीमाएं हैं जिनके अन्दर रहकर ही वह समाचार प्रकाशित कर सकते हैं।

भ्राता यशवन्त आगे, मुख्य सम्पादक 'हितवाद' भोपाल ने कहा कि जैसे रेत या झूठ पर महल खड़ा नहीं किया जा सकता ऐसे ही समाचार-पत्र केवल झूठे समाचार प्रकाशित करके नहीं चल सकता। समाचार-पत्र को सच्चाई प्रकाशित करनी ही पड़ती है। और इसके लिए विश्वसनीयता आवश्यक है।

भ्राता रतिराम निदेशक, आकाशवाणी, जोधपुर ने कहा कि हमें उत्तेजना फैलाने वाले समाचार प्रकाशित नहीं करने चाहिएं। देश, समाज और व्यक्ति के कल्याण अर्थ हमें ऐसे तरीके से समाचार प्रकाशित करने चाहिएं जिससे रचनात्मक स्थिति पैदा हो। उन्होंने कहा कि आकाशवाणी साधारण जनता की सेवा का कार्य करती है जिसमें सभी वर्ग के लोगों को सम्मिलित किया जाता है।

भ्राता विनोद मिश्रा, सलाहकार, हिन्दुस्तान समाचार-पत्र, ने बताया कि समाचार-पत्र का उद्देश्य सूचना देना, शिक्षा देना तथा मनोरंजन करना है। आज अगर समाचार-पत्र सही दिशा में शिक्षा देंगे तो समाज का बहुत कल्याण कर सकते हैं और संसार को सुखमय बनाने में अपना योगदान दे सकेंगे।

मंच का संचालन ब्र.कु. शुक्ला, राजयोग शिक्षिका, नई दिल्ली ने किया तथा अफ्रीका में स्थित सेवाकेंद्रों की निदेशिका ब्र.कु. वेदान्ती ने योगाभ्यास कराया। □

माउंट आबू: सर्व के सहयोग से सुखमय संसार' के अन्तर्गत हुई मीडिया कार्यशाला का दृश्य।

मानव-एकता का आधार है– स्वधर्म की पहचान

माऊंट आबू: 29 सितम्बर। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के माऊंट आबू स्थित मुख्यालय में धार्मिक नेता एवं धर्मवेत्ताओं के स्नेह-मिलन के अवसर पर श्री चेतनदेव आश्रम कनखल, हरिद्वार के स्वामी परमानन्द जी उदासीन ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि अगर हम किसी का भला नहीं कर सकते तो कम-से-कम किसी का बुरा तो न करें, यह भी कम नहीं। हम जो कहते हैं, वह करके दिखाना आवश्यक है। दया, प्रेम ही धर्म के लक्षण हैं। मरने के बाद धर्म ही जाता है।

बम्बई के भ्राता रमेश शाह जी ने कहा कि धर्म एक शक्ति तो है लेकिन ये अहंकार की भावना बढ़ा सकता है कि हम जो कहते हैं वह सच है। इससे ही संघर्ष होता है। आजकल कई धर्मों का लक्ष्य धर्म-परिवर्तन हो गया है। इस विश्वविद्यालय का कार्य धर्म-परिवर्तन के लिए न होकर जीवन परिवर्तन के लिए है। यहां धार्मिकता का मापदंड है कि बुराई को जीतने का पुरुषार्थ कितना है, सच्चाई और सम्पूर्णता के पथ पर कितना अग्रसर हैं। 'इसलिए सभी धर्म की आत्माएं इसमें सहानुभूत होती हैं। आज ज़रूरत है आध्यात्मिकता को पुन: परिभाषित करने की, इसका अर्थ समझने की। सभी धर्म नेता इकट्ठे आकर विचार करें कि हम कैसे विश्व में एकता ला सकते हैं। कई धर्म-नेता जो कहते हैं कि धर्म के नाम पर हिंसा, पाप नहीं है। ऐसे विचारों में सम्पूर्ण परिवर्तन लाने की आवश्यकता पर भी धार्मिक नेताओं को सोचना है। ताकि धर्म फिर से चरित्र निर्माण द्वारा विश्व में एकता ला सके।

इलाहाबाद के टाट बाबा ने कहा कि विश्व में एकता लाने के लिए ब्रह्माकुमारी विश्वविद्यालय ने बहुत सुन्दर प्रयास किया है। सभी चाहते हैं कि शान्ति, प्रेम आनन्द हो। पर हम चूकते कहां हैं, कि हम यह सब चाहते हैं पर देना नहीं चाहते। सम्मान सब चाहते हैं, पर देना नहीं चाहते। ब्रह्माकुमारी ऐसी संस्था है, जो लेती नहीं, देती है। यहां हम सबको कितना सम्मान मिलता है। मौन की भाषा तथा साधना द्वारा हम अन्त: परिवर्तन करें जिससे हमारा व्यवहार शुद्ध हो और विश्व में एकता आए।

कार्यक्रम की अध्यक्षा दादी आत्म इन्द्रा जी ने कहा कि मानव-एकता का आधार है स्वधर्म की पहचान। स्वधर्म का आधार है आत्मा का ज्ञान। हम सब आत्मा हैं,हमारा रूप ज्योति है, हम एक घर (ब्रह्मलोक) से आए हैं। अलग-अलग शरीर धारण कर भिन्न-भिन्न पार्ट बजा रहे हैं। मानव को आदि स्वरूप, संस्कार, गुणों का ज्ञान दिया जाए कि हम सब असल में शान्त, प्रेम स्वरूप थे। जैसे गंगा का जल असल में शुरू में पवित्र होता है, फिर मैदान में आकर गन्दा बनता है। ऐसे असली पहचान मिलने से परिवर्तन आ सकता है और व्यक्ति के परिवर्तन से समाज और विश्व का परिवर्तन हो सकता है। साधू-सन्तों ने अपनी पवित्रता से देश को थमाया है। अब हम सबके सहयोग से हमें नर और नारी में जो आसुरी प्रवृत्तियां हैं उनको मिटाना है। कर्मों की गति का ज्ञान देकर मानव को श्रेष्ठ कर्म करने की प्रेरणा देनी है।

ब्रह्माकुमारी प्रेमलता जी, राजयोग शिक्षिका, देहरादून ने कहा कि स्वार्थ और इच्छाओं के कारण ही विश्व में अनेकता आई है, इन पर काबू पाने के लिए मन पर नियंत्रण चाहिए। मन रूपी घोड़े की लगाम बुद्धि है। बुद्धि को सतोगुणी,श्रेष्ठ बनाने के लिए श्रेष्ठ संग चाहिए। श्रेष्ठ संग परमात्मा का होता है जो हम राजयोग द्वारा कर सकते हैं।

कार्यक्रम का संचालन ब्र.कु. ऊषा, बम्बई ने किया एवं कहा कि धर्म एक ऊंची शक्ति है, जो विश्व में एकता ला सकती है। लेकिन जब धर्म धर्मांध (कट्टरपन) का रूप ले लेता, अन्धा बन जाता तो विश्व में अनेकता का कारण बन जाता है। इसमें आध्यात्मिक शक्ति आने से ही विश्व में एकता हो सकती है। □

□ ब्र.कु. आत्म इन्द्रा

माऊंट आबू: समाजसेवी संस्थाओं तथा समाजसेवकों के लिए कार्यशाला में बोलते हुए भ्राता के.बी. विश्वानाथ जी।

✱ स्वयं को सुधारो, जग सुधरेगा ✱

□ ब्र.कु. चन्द्रमणि

माऊंट आबू: 29 सितम्बर। समाजसेवी संगठन व समाज-सेवी व्यक्तियों पर आयोजित कार्यशाला में ब्रह्माकुमारी अवधेश जोनल इन्चार्ज, भोपाल ने अपने उद्बोधन में कहा कि चरित्र-निर्माण की सेवा ही सर्वश्रेष्ठ सेवा है। हमें अशान्त एवं तनावमुक्त आत्माओं को शान्ति प्रदान करनी है। कमज़ोर मन के कारण व्यक्ति बुराइयां नहीं छोड़ पाता है। आध्यात्मिकता के द्वारा ही यह सम्भव है।

सुश्री सरोज ओझा, टी.वी. आर्टिस्ट, समाजसेविका, बम्बई ने कहा कि हमें एक दिन ऊपर जाना है। अतः हमें अच्छे कर्म करने चाहिएं।

भोपाल के आर.ए.एस. अधिकारी भ्राता आर.एस. गोयल ने कहा कि जब तक चरित्र-निर्माण नहीं करेंगे तब तक कोई भी समाजसेवी अपना दायित्व पूरा नहीं कर सकेगा। दिव्यगुणों को धारण करना समाजसेवी के लिए आवश्यक है।

इन्दौर से पधारे बीस सूत्रीय कमेटी के सदस्य श्री रमेश चौकसे ने कहा कि बिना सहयोग से किसी भी सुखमय संसार की कल्पना नहीं की जा सकती। जो मार्ग से भटक गया है उसको राह पर लाना ही समाजसेवा है।

मुख्य अतिथि श्री रूसी वी. जिमी जो कि कलकत्ता के पूर्व शेरीफ रह चुके हैं, ने संस्था की भूरी-भूरी प्रशंसा की तथा कहा कि विज्ञान व टेक्नॉलोजी ने मानव की कोई समस्या का समाधान नहीं किया है। हमें निःस्वार्थ भाव से सेवा करनी चाहिए। सेवा से बड़ी कोई खुशी नहीं होती है।

अन्त में संस्था की सह-मुख्य प्रशासिका दादी चन्द्रमणि जी ने अपने आशीवर्चन में कहा कि आज सभी विकारों के वशीभूत हो चुके हैं। पहले खुद को सुधारें। एक परमात्मा ही मनुष्य को सुख दे सकता है। हमें सभी के प्रति अपने संकल्प शुद्ध रखने चाहिएं।

आध्यात्मिकता और राजनीति के बेलैन्स से कैसे सुखमय संसार ला सकते हैं

राजनीतिज्ञों की कार्यशाला को ब्रह्माकुमार बृजमोहन, सम्पादक, प्यूरिटी, नई दिल्ली ने सम्बोधित करते हुए कहा कि समाज में धर्म सत्ता और राजनीति सत्ता सदा से ही मुख्य रूप से रही है जो कि जीवन को प्रभावित करती रही है। राज्य सत्ता का लक्ष्य है कि भौतिक सत्ता को कायम रखना और धर्म सत्ता का लक्ष्य है धर्म को बनाए रखना। राज्य सत्ता को तो धर्म वालों को भी मानना पड़ता है। परन्तु धर्म सत्ता अर्थात् धर्म को मानना एच्छिक हो गया है। आध्यात्मिकता से तात्पर्य है मानवीय मूल्यों से। आध्यात्मिकता यूनीवर्सल है। राजनीति से नीति को अलग कर देने से और धर्म से कर्म को अलग कर देने से आज गिरावट हुई है, इस कारण से मनुष्य दुःखी अशान्त और तनाव में है।

महाराष्ट्र विधानसभा के सदस्य माननीय विनायक राव जी ने कहा कि राजनीति में आध्यात्मिक शक्ति की कमी होने से मनुष्यों पर प्रभाव नहीं पड़ता है। महात्मा गांधी कोई प्रेज़ीडेंट नहीं थे लेकिन वे जो बात कहते थे उसका प्रभाव पड़ता था। इसका कारण था गांधी जी में आध्यात्मिक शक्ति। अहिंसा की ताकत से देश को आजाद भी कराया।

मध्यप्रदेश के पूर्व मंत्री माननीय राम जी महाजन ने कहा कि राजनीति तब तक ठीक नहीं चल सकती है जब तक मनोबल मजबूत न हो और आध्यात्मिक शक्ति ना हो। मैं ब्रह्माकुमारी संस्था से यह अनुरोध करता हूं कि राजनीतिज्ञों के लिए ऐसी कोई वर्कशाप आयोजित कर उन्हें सही रास्ता दिखाएं जाने का कार्य करें तो देश का उद्धार हो सकता है। राजनीति समाज की रीढ़ की हड्डी होती है, उसके लिए उच्च आदर्श. आत्मिक शक्ति की विशेष आवश्यकता है जो कि राजयोग की शिक्षा से सम्भव हो सकता है।

कार्यक्रम की अध्यक्षा दादी हृदयपुष्पा जी ने कहा कि जो सच्चे होते हैं उन पर विघ्न अधिक आते हैं और जो विघ्नों को पार कर लेते हैं उनका प्रभाव ही समाज पर स्थिर पड़ता है। जबकि साधारण व्यक्ति विघ्नों को देख घबरा जाते हैं क्योंकि सच्चाई का परदा देरी से उठता है। और साधारण व्यक्ति में धैर्यता की कमी होती है। कार्यक्रम का संचालन ब्रह्माकुमारी मीनू, मद्रास ने किया। □

राजयोग की शिक्षा द्वारा ही व्यवहारिक जीवन सम्भव

□ ब्र.कु. चन्द्रमणि

माऊंट आबू: 29 सितम्बर। आज के शिक्षा विभाग की कार्यशाला का आरम्भ आदरणीय राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी चन्द्रमणि जी के आशीवर्चनों के द्वारा और घासीराम विश्व-विद्यालय, बिलासपुर के कुलपति डॉ. डी.एन. तिवारी जी की अध्यक्षता में हुआ।

आदरणीय राजयोगिनी दादी चन्द्रमणि जी ने वर्तमान शिक्षा प्रणाली में बच्चों के दिलों में स्नेह व प्यार की भावना के विकास पर ज़ोर देकर बताया कि बचपन से बच्चों में आध्यात्मिक शिक्षा के द्वारा ही उन्हें सुधारा जा सकता है और उनमें नैतिक मूल्यों का विकास कर एक श्रेष्ठ मानव बनाया जा सकता है। सबसे ऊंची पढ़ाई है राजयोग की शिक्षा जो व्यवहारिक जीवन बनाती है। अत: सभी राजयोग की शिक्षा का महत्व समझें और बच्चों के वास्तविक जीवन के विकास में सहयोगी बनें। तभी शिक्षा जगत् के द्वारा सुखमय संसार का निर्माण किया जा सकता है।

मुख्य प्रवक्ता ब्र.कु. डॉ. हरीश जी ने बताया कि शिक्षा का उद्देश्य है आज के युवा वर्ग को अज्ञान से मुक्त करना। आज का युवा लक्ष्यविहीन बन गया है, अत: उनमें आत्मबल और आत्म-विश्वास भरना होगा। नम्रता, सरलता, शालीनता, अनुशासन की पदवी वास्तविक पदवी है। जो राजयोग की शिक्षा द्वारा उपलब्ध की जा सकती है।

भ्राता डी.एन. नेगी, डिप्टी कमिश्नर, दिल्ली प्रशासन ने आज के युवावर्ग में व्याप्त हताशा, निराशा एवं पयालनवादी वृत्ति को दूर करने के लिए उनमें चरित्र-निर्माण व मानव मूल्यों की आवश्यकता पर बल दिया और कहा कि राजयोग की शिक्षा के द्वारा ही समाज परिवर्तन सम्भव है।

अन्य विद्वान् प्रवक्ताओं में भ्राता जी.एन. पटेल, चेयरमैन, स्कूल शिक्षा बोर्ड, गांधी नगर और डॉ. सीताराम शर्मा असिस्टेन्ट डॉयरेक्टर, शिक्षा विभाग, नई दिल्ली ने वर्तमान शिक्षा प्रणाली में व्याप्त दोषों का विवरण देकर बताया कि शिक्षा का उद्देश्य "तमसो मा ज्योर्तिगमय" अर्थात् अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाना है, परन्तु वर्तमान में शिक्षाविद् एवं शिक्षा विभाग द्वारा इसकी उपेक्षा की जाती रही है। शिक्षा जगत् में भी चारित्रिक हनन बढ़ता ही गया है। ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय एक ऐसा सामाजिक संगठन है जो शिक्षा जगत् में व्याप्त दोषों के निवारण में महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है। मैसूर विश्वविद्यालय के अंग्रेजी के व्याख्याता भ्राता बाला जी नागानंदा जी ने अपनी प्रभावशाली शैली में युवावर्ग में व्याप्त अशान्ति व लक्ष्यहीनता के निवारण में इस अलौकिक ईश्वरीय विश्वविद्यालय की श्रेष्ठ राजयोग शिक्षा प्रणाली को वर्तमान विश्वविद्यालयों में भी अपनाने की आवश्यकता पर बल दिया। शासकीय तकनीकी महाविद्यालय, रीवा के प्राचार्य प्रो. एन.पी. जायसवाल जी ने आज के युवावर्ग में व्याप्त अनैतिकता, चारित्रिक पतन और शिक्षा पद्धतियों में हुई क्षतियों के लिए वर्तमान समाज, अध्यापक एवं अभिभावकगण को बहुत कुछ अंशों में ज़िम्मेदार बताकर आध्यात्मिक शिक्षा के द्वारा नैतिक मूल्यों के विकास पर जोर दिया।

इस कार्यशाला के अध्यक्ष घासीराम विश्वविद्यालय, बिलासपुर के कुलपति माननीय डी.एन. तिवारी जी ने कहा कि शिक्षा का उद्देश्य साक्षरता है परन्तु साक्षरता ऐसी हो जो न किसी का शोषण करे एवं न किसी के द्वारा शोषित हो सके। शिक्षा प्रणाली ऐसी हो जो शिक्षा के साथ चरित्र-निर्माण का कार्य भी कर सके। शिक्षाविद्, शिक्षा और विद्यार्थी तीनों का आपस में ऐसा सामंजस्य हो जो कि व्यवहारिक धरातल पर समाज को नैतिक मूल्यों का विकास कर सकें। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भी मान्य किया गया है कि शिक्षा में नैतिक मूल्यों को महत्व दिया जावे। □

माऊंट आबू: शिक्षाविदों के लिए कार्यशाला में भ्राता जी.एन. पटेल, अध्यक्ष कौंसिल ऑफ बोर्डस ऑफ स्कूल एजूकेशन, गांधी नगर अपने विचार रखते हुए।

"पवित्रता एवं नैतिकता के विकास से विश्वशान्ति स्थापित हो सकती है"

—न्यायमूर्ति के.पी. महापात्रा

माऊंट आबू : 29 सितम्बर। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के मुख्यालय में आयोजित "सर्व के सहयोग से सुखमय संसार" सम्मेलन के अन्तर्गत खुले अधिवेशन में संस्था की सह-प्रशासिका राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी चन्द्रमणि जी ने कहा कि वर्तमान परिस्थितियों ने मानव मन को और अधिक भटकाव के पथ पर ला दिया है, अतएव मन को समझने के लिए स्वयं की पहचान तथा अनुभूति करना आवश्यक है। आत्मानुभूति एवं परमात्मानुभूति से आत्मा में पवित्रता, सुख-शान्ति का प्रवाह होता है एवं मन में कई आध्यात्मिक शक्तियों की जागृति होती है। इन शक्तियों के द्वारा मानव अपने मन की कमज़ोरियों पर विजय प्राप्त कर स्वयं का उत्थान तथा संसार को सुखमय बनाने में अपना योगदान कर सकता है।

उड़ीसा उच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति माननीय के.पी. महापात्रा ने कहा कि भारतीय संस्कृति और धर्म में सहनशीलता को बहुत ही महत्व दिया गया है। जगन्नाथ मंदिर को देखने से स्पष्ट होता है कि उस समय राजा और प्रजा में कोई अन्तर नहीं था। परन्तु आज हम देखते हैं कि अनेक धर्मों में भेदभाव हो गया है। अपराधों में वृद्धि का कारण भी सामाजिक कुरीतियां और पालक हैं जो अपने बच्चों पर पूरा ध्यान नहीं देते हैं। बालकों का व्यक्तित्व परिवार में बनता है एवं उन्हें चरित्रवान बनाने की जिम्मेवारी भी माता-पिता पर निर्भर है। पवित्रता और नैतिकता का विकास ही समाज की सभी बुराईयों को समाप्त कर सकता है और व्यक्तिगत शान्ति से विश्वशान्ति स्थापित हो सकती है।

ब्रह्माकुमारी हृदयमोहिनी जी, क्षेत्रीय संचालिका नई दिल्ली ने कहा कि मन अर्थात् संकल्प शक्ति एवं हम संकल्प शक्ति के आधार से ही परमपिता परमात्मा से मिलन मना सकते हैं। यही मन की सबसे बड़ी शक्ति है। सभी समस्याओं का कारण एवं उनका समाधान भी मन के माध्यम से ही होता है। विज्ञान के द्वारा उपलब्ध साधन एवं सुविधाओं के आविष्कार का आधार भी मन ही है, अतएव मन की शक्ति का प्रयोग परमपिता परमात्मा में लगाने का प्रयास करो तो स्वयं का, समाज का एवं विश्व कल्याण के सर्वोत्तम कार्य में सहयोगी बन सकेंगे।

इलाहाबाद से सच्चा बाबा आश्रम के श्री गोपाल स्वामी महाराज ने कहा कि जीवन में मन का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है। मन को जीतने वाला ही संसार को जीतता है। जो सदा संतुष्ट है, कोई भी प्रकार की याचना नहीं करता, वही सबसे बड़ा धनाढ्य है तथा जिसकी जितनी अधिक कामनाएं अथवा इच्छाएं हैं वही उतना गरीब है। यदि मन से चाह और चिन्ता निकल जावे तो वह विश्व का शहंशाह है। अतएव मन को जीतने की साधना करो, मन में दया, करुणा, प्रेम एवं सहानुभूति की भावना का प्रादुर्भाव कर अपने जीवन को अच्छा बनाओ।

कलकत्ता के पूर्व शैरिफ माननीय रूसी बी. जिमी ने भी अपना शुभकामना संदेश दिया। कार्यक्रम का संचालन माऊंट आबू की राजयोग शिक्षिका ब्रह्माकुमारी शशि बहिन ने किया। अहमदाबाद की ब्रह्माकुमारी चन्द्रिका बहन ने सामूहिक ध्यान योग के द्वारा आत्मानुभूति का अनुभव कराया। सांस्कृतिक कार्यक्रम में इन्दौर स्थित "दिव्य जीवन कन्या छात्रावास" की छात्राओं ने "स्वर्णिम सवेरा" नामक नृत्य नाटिका प्रस्तुत की। □

माऊंट आबू: कलकत्ता के पूर्व शैरिफ भ्राता रूसी बी. जिमी खुले अधिवेशन को सम्बोधित करते हुए।

आध्यात्मिकता ही मानव को धरती पर मानव की तरह चलना सिखा सकती है

—लाल कृष्ण अडवानी—

माऊंट आबू: 30 सितम्बर। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के मुख्यालय में आयोजित "सर्व के सहयोग से सुखमय संसार" सम्मेलन के प्रातःकालीन खुले अधिवेशन में भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष एवं सांसद माननीय लाल कृष्ण अडवानी जी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि वर्तमान वैज्ञानिक उपलब्धियां बीसवीं शताब्दी की देन हैं परन्तु हमारी भारतीय संस्कृति शताब्दियां प्राचीन है जिससे पश्चिम के वैज्ञानिक भी प्रेरणा लेते हैं। परन्तु आज आध्यात्मिक प्रगति का अभाव है। विज्ञान से मानव आकाश में पंछी की तरह उड़ सकता है, समुद्र में मछली की तरह विचरण कर सकता है परन्तु धरती पर मानव की तरह चल नहीं सकता है। अतएव आध्यात्मिकता में ही वह क्षमता एवं प्रकाश है जिससे वह मानवीय मूल्यों के आधार पर चल सके। प्रत्येक मनुष्य में साधु एवं चोर की प्रवृत्ति रहती है। ऐसे सम्मेलन मानव की साधु प्रवृत्ति को प्रोत्साहन देते तथा चोर प्रवृत्ति का दमन करते हैं और समाज को नई दिशा की ओर प्रेरित करते हैं।

सम्मेलन की अध्यक्षा संस्था की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी जी ने कहा कि इच्छा और ममता दोनों ही अनेक बुराइयों को जीवन में लाने का कारण बनती हैं। अतएव इच्छा और ममता को समाप्त कर दिव्यता को धारण करने के लिए स्वचिंतन और ईश्वरीय चिन्तन में अपने मन को लगाएं। इससे आन्तरिक परिवर्तन की ओर मानव अग्रसर होगा। अन्तर्मुखता, सहनशीलता, धैर्यता, मधुरता आदि दिव्यगुणों का प्रादुर्भाव होगा। इन गुणों के द्वारा ही समस्त मानवता सुखमय संसार की ओर बढ़ेगी। स्वयं का अच्छा जीवन ही दूसरों को भी अच्छा बनने की प्रेरणा देगा। परिवर्तन की इस प्रक्रिया को जितना हम बढ़ाएंगे उतनी ही जल्दी हम इस धरा को सुख-शान्ति सम्पन्न बना सकेंगे।

राजस्थान के शिक्षा राज्यमंत्री माननीय दामोदर आचार्य जी ने कहा कि विश्व-बंधुत्व की भावना को जागृत करने पर ही मानवीय मूल्यों को आत्मसात किया जा सकता है। वर्तमान समय समाज में सबसे बड़ी बुराई मनुष्य का दोहरा व्यक्तित्व है। वह कहता कुछ है और करता दूसरा है। अतः इस दोहरे व्यक्तित्व के चोले को उतारकर कथनी और करनी के अन्तर को मिटाने की अति आवश्यकता है। तब ही सत्य, अहिंसा, दया, निर्भीकता, साहस आदि मानवीय गुणों का समावेश जीवन में किया जा सकता है।

इलाहाबाद के स्वामी आनन्द देव, टाट बाबा ने भी अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि आज स्वार्थ के कारण सामाजिक रिश्ते सिमटते एवं बिखरते जा रहे हैं। संयुक्त परिवार समाप्त हो गए हैं। अतः आत्मिक भाव के आधार पर ही इन सम्बंधों को शाश्वत बनाया जा सकता है। अपनी आत्मा को पहचानो तब ही सद्गुणों को अपना सकेंगें।

सम्मेलन को कनार्टक विधानसभा के अध्यक्ष माननीय वी.जी. बानाकर, वर्ल्ड रिन्युअल स्प्रिचियुल ट्रस्ट, बम्बई के प्रबन्धक ट्रस्टी भ्राता रमेश शाह जी एवं योजना आयोग, दिल्ली के सलाहकार माननीय वीरेन्द्र प्रकाश जी ने भी सम्बोधित किया।

कार्यक्रम का संचालन एवं सम्मेलन के बारे में जानकारी ब्रह्माकुमारी ऊषा बहन, बम्बई ने दी तथा ब्रह्माकुमारी सुधा बहन, दिल्ली ने सभा में उपस्थित जनसमुदाय को योगाभ्यास कराया। □

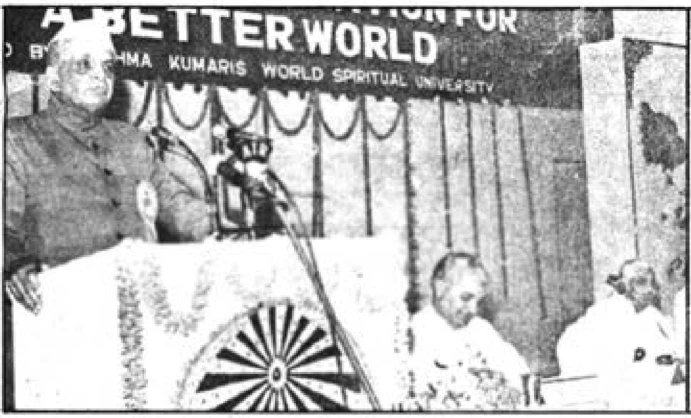

माऊंट आबू: 'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार' सम्मेलन में सम्बोधित करते हुए मिनारटी कमीशन के सदस्य भ्राता तल्लयार खान जी। ब्र.कु. अमीर चन्द जी तथा दादी प्रकाशमणि जी मंच पर उपस्थित हैं।

शिक्षाविद् कार्यशाला में

माउंट आबू: 30 सितम्बर। दिल्ली युनिवर्सिटी के लेक्चरर डॉ. पी.सी. पातंजलि ने कहा कि दिल्ली युनिवर्सिटी का जहां हम नौकरी करते हैं तथा गाडली युनिवर्सिटी में रात-दिन का फर्क है। शिक्षा का उद्‌देश्य समाज में परिवर्तन लाना ही है और अच्छा नागरिक बनाना है। शिक्षा के पाठ्यक्रम में मानव मूल्यों की कहीं-कहीं चर्चा है परन्तु अमल में लाने का प्रयास नहीं है। इसके लिए हमें शिक्षा के ढांचे को ही बदलना होगा। उन्होंने कहा कि समाज के अन्य वर्गों की भेंट में शिक्षक की ज्यादा जिम्मेवारी है। इसके लिए नैतिक शिक्षा को अपनाना आवश्यक है।

राजस्थान संस्कृत परिषद् के प्रधान और प्रमुख लेखक भ्राता चन्द्र दानचरण ने कहा कि आत्म-ज्ञान जो कि ऋषियों के लिए भी बहुत महत्वपूर्ण था, वही यहां के राजयोग का आधार है। आपने कहा कि आज की शिक्षा पद्धति में अर्थ पर अधिक महत्व दिया जाता है चाहे वह अनर्थ से क्यों न आए? आज विद्यार्थियों के संस्कार परिवर्तन करने की आवश्यकता है। उन्होंने आगे बताया कि आज टी.वी. और सिनेमा का भी उनके ऊपर खराब प्रभाव पड़ता है। आत्म-विद्या में सबके भले की बात है। और प्रौढ़ शिक्षा का प्रसार होना चाहिए। मुख्य बात है नैतिक शिक्षा का अधिक से अधिक प्रसार हो।

कार्यशाला के प्रारम्भ में मुख्य भाषण ब्रह्माकुमार मृत्युंजय कार्यकारी सचिव का हुआ। आपने बताया कि वर्तमान शैक्षणिक संस्थाओं में बहुत गिरावट आ गई है। इस ईश्वरीय विश्व-विद्यालय का उद्‌देश्य आध्यात्मिक शिक्षा के द्वारा दैवी दुनिया की स्थापना करना है। व्यक्तिगत विकास के लिए सम्पूर्ण स्वास्थ्य, मानसिक विकास, नैतिक विकास तथा आध्यात्मिक विकास है। इसके लिए हमारे शैक्षणिक पाठ्यक्रम में आध्यात्मिक शिक्षा का होना अनिवार्य है।

उत्तर प्रदेश सेवाकेंद्रों की संचालिका राजयोगिनी ब्रह्मा-कुमारी आत्म इन्द्रा दादी जी ने कहा कि परमपिता परमात्मा स्वयं परमशिक्षक के रूप में शिक्षा देने का कार्य कर रहे हैं। आपने कहा कि राजयोग के द्वारा ही व्यक्तित्व का विकास होता है और मानव अच्छा मानव बन जाता है। अत: यदि पढ़ाई के साथ-साथ इस राजयोग की शिक्षा को भी जोड़ेंगे तो बहुत उन्नति होगी। अपना व्यक्तिगत उदाहरण दिया कि कैसे हमारे पिताश्री जी ने छोटेपन से हमें इसी प्रकार से ये दोनों शिक्षाएं दीं और उसी के परिणामस्वरूप आज हम सब अपने जीवन को सम्पूर्ण विकास की ओर ले जाने का अनुभव कर रहे हैं और इसी अनुभव के आधार पर हम कह सकते हैं कि इसी ईश्वरीय शिक्षा के द्वारा ही रामराज्य शीघ्र ही अवश्य आयेगा। बिगड़ी को बनाने वाला केवल परमात्मा ही नहीं बल्कि हम सभी हैं। इसके लिए सभी को परमपिता का सही परिचय दें।

सौराष्ट्र युनिवर्सिटी के भूतपूर्व वाइसचांसलर प्रो. यशवन्त शुक्ला ने मुख्य अतिथि के रूप में भाषण करते हुए कहा कि जब अध्यापक अपने विद्यार्थियों के साथ स्नेह करता है और अपने विषय का ज्ञान रखता है तो कोई समस्या नहीं होती। आपने कहा कि शिक्षा का उद्‌देश्य सिर्फ सूचना देना मात्र ही नहीं है बल्कि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का विकास करना भी आवश्यक है। आपने आगे बताया कि अध्यापक के चरित्र का विद्यार्थियों पर अवश्य असर पड़ता है। इसके लिए हमें अपने व्यक्तित्व का विकास पहले करना है। फिर हम विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का विकास कर सकते हैं। आगे आपने बताया कि अध्यापक या अध्यापिका के अन्दर एक माता के सभी गुण होना आवश्यक हैं। तभी उस द्वारा विद्यार्थियों में परिवर्तन आ सकता है।

सभा के अध्यक्ष राजस्थान सरकार के शिक्षा मंत्री भ्राता दामोदर आचार्या जी ने कहा कि "विद्या ददाति विनयम्"। आपने आगे बताया कि इस ईश्वरीय विश्वविद्यालय के वातावरण में स्वच्छता और शान्ति को देखकर मैं बहुत प्रभावित हुआ हूं।

गुजरात युनिवर्सिटी के हिन्दी विभाग के रीडर प्रो. रघुवर चौधरी ने कहा कि इस ईश्वरीय विश्वविद्यालय की व्यवस्था अति उत्तम है।

माउंट आबू: शिक्षाविदों की कार्यशाला में बोलते हुए दिल्ली विश्वविद्यालय में लेक्चरर डॉ. पी.सी. पातंजली जी।

कार्यक्रम के अन्त में प्रो. हरीश शुक्ला जी ने प्रस्ताव प्रस्तुत किया जिसे सारी सभा ने सर्व-सम्मति से पारित किया। कार्यक्रम का संचालन ब्र.कु. प्रो. धनजीभाई पटेल, उप- प्राचार्य, कॉमर्स कॉलेज, पाटन ने किया। □

समाचार-पत्र
सकारात्मक समाचारों पर अधिक बल दें

माउंट आबू: 30 सितम्बर । मीडिया कार्यशाला—द्वितीय में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के जनसंपर्क अधिकारी ब्रह्माकुमार करुणा जी ने अपने प्रवचन में कहा कि आज के मानव के पास विज्ञान द्वारा दिए गए सभी भौतिक सुखों के साधन प्राप्त हैं लेकिन उसे अनेक समस्याओं का जीवन में सामना करना पड़ता है । सभी मनुष्यों को जन्म से स्वतंत्रता तथा बराबर के अधिकार व सम्मान प्राप्त हैं । अतः मीडिया को चाहिए कि वे उन्हें समान अधिकारों को प्राप्त कराने में अपना पूरा-पूरा योगदान दे फिर वे चाहे किसी भी जाति, धर्म, रंग, भाषा से सम्बन्धित हो । इस संसार को सुखमय बनाने के लिए मीडिया को समाज के सभी लोगों को आजादी से अपने सांस्कृतिक जीवन में भाग लेने तथा साहित्य, कला और वैज्ञानिक उन्नति के साधनों से लाभ उठाने में सहयोगी बनना चाहिए और पारस्परिक स्नेह, सहयोग तथा मेलजोल की भावना जागृत करने में अपना योगदान देना चाहिए । अन्त में उन्होंने कहा कि स्वयं के परिवर्तन से ही विश्व परिवर्तन होगा ।

कार्यशाला में उपस्थित मीडिया से सम्बंधित महानुभावों को सम्बोधित करते हुए ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी दादी जानकी जी ने कहा कि आज अखबारों में सनसनीखेज़ समाचारों को पढ़कर लोगों के जीवन में तनाव उत्पन्न होता है तथा नकारात्मक समाचार उनके जीवन को दुःखी और अशान्त बनाता है अतः हमें चाहिए कि उन्हें अच्छे समाचार और सकारात्मक विचार अपने माध्यम द्वारा दें ताकि वे अच्छे नागरिक बन सकें । उन्होंने लन्दन, ग्याना एवं बारबडोस आदि देशों का उदाहरण देते हुए कहा कि वहां पर प्रतिदिन प्रातः ओमशान्ति का गीत आकाशवाणी द्वारा प्रसारित किया जाता है तथा अखबारों में भी आज का श्रेष्ठ विचार प्रकाशित किया जाता है । जिससे लोगों को अच्छा बनने की प्रेरणा मिलती है ।

बंगलौर दूरदर्शन के निदेशक भ्राता के.एम. अनीस-ऊल-हक ने कहा कि हमें पहले स्वयं समझना होगा कि सुखमय संसार कैसा होगा तभी हम इस संसार को सुखमय बनाने में अपना योगदान दे सकेंगे । 'दूरदर्शन' के आने से पहले हम विदेशों के बारे में केवल पुस्तकों द्वारा या वहां की यात्रा करने पर ही जानकारी प्राप्त कर सकते थे लेकिन अब हम एक स्थान पर बैठे हुए ही उसके बारे में पूर्ण जानकारी प्राप्त कर सकते हैं । अतः उन्होंने कहा कि हमें इन देशों के साथ अच्छे सम्बंध स्थापित करने के लिए हमें वहां की संस्कृति एवं सभ्यता को सही और श्रेष्ठ तरीके से प्रदर्शित करना चाहिए ।

चन्डीगढ़ से प्रकाशित होने वाले 'इंडियन एक्सप्रेस' समाचार-पत्र के रेजिडेण्ट एडीटर भ्राता प्रेम कुमार ने कहा कि आज विश्व में दुःख, अशान्ति, भय, पारस्परिक असहयोग, गरीबी व भुखमरी का वातावरण फैला हुआ है । हमें चाहिए कि सुखमय संसार बनाने में हम अपना पूरा योगदान दें ताकि इन बुराइयों को जड़ से समाप्त कर सकें और लोगों में आध्यात्मिक जागृति ला सकें ।

दिल्ली से प्रकाशित होने वाले 'प्यूरिटी' के सम्पादक ब्रह्माकुमार बृजमोहन जी ने कहा कि ''जहां चाह वहां राह'' यदि सच्चे दिल से मेहनत करेंगे तो अवश्य कितनी ही सीमाएं होते हुए इस महान् कार्य में अपना सहयोग दे सकेंगे । अगर हम लोगों को अच्छे समाचार पढ़ने व सुनने के लिए देते हैं तो वह भी अच्छा बनने का प्रयास करेंगे । आज मानव के जीवन में शान्ति व स्नेह न होने के कारण उसका जीवन दुःखमय बन चुका है । अतः हमें चाहिए कि उनके जीवन को शान्ति और स्नेहमय बनाने के लिए खुले दिल से इस कार्य में सहयोगी बनें ।

चन्डीगढ़ से प्रकाशित होने वाले 'ट्रिब्यून' समाचार-पत्र के सम्पादक भ्राता हरभजन सिंह ने कहा कि बड़े दुःख की बात है कि कुछ समाचार-पत्र गन्दे समाचार प्रकाशित करते हैं और आध्यात्मिक समाचारों को प्रकाशित न करके राजनैतिक अथवा सनसनी फैलाने वाले समाचारों को महत्व देते हैं । उन्होंने कहा कि मीडिया का समाज को सुधारने में बहुत बड़ा हाथ है और उन्हें चाहिए कि वे सकारात्मक विचारों और नैतिकता फैलाने के समाचारों को ही अपने समाचार-पत्रों में प्रधानता दें ।

हिन्दुस्तान हिन्दी समाचार-पत्र के सम्पादकीय सलाहकार भ्राता विनोद कुमार मिश्रा जी ने कहा कि मैं यह नहीं मानता कि भारत के अखबार सुखमय संसार बनाने में अपना योगदान नहीं देते हैं । वास्तव में उनकी भी एक सीमा है जिसके अन्दर वे समाचार प्रकाशित कर सकते हैं क्योंकि भारत की अधिकतम जनता अशिक्षित होने के कारण समाचार पढ़ नहीं सकती है । फिर भी मैं चाहूंगा कि मीडिया वाले नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों की पुनर्स्थापना तथा उनके आर्थिक विकास में अपना पूरा योगदान दें ।

लन्दन से पधारी हुई बहन ब्रह्माकुमारी निक्की ने कहा कि मीडिया जनसाधारण तक अपनी बात पहुंचाने में सम्पन्न है अतः

मीडिया को चाहिए कि वे लोगों में सकारात्मक विचारधारा फैलाने में अपना योगदान दें तथा नैतिक मूल्यों को ही अपने समाचार-पत्रों में प्रधानता देकर समाज कल्याण के महान् कार्य में सहयोगी बनें।

कार्यशाला का संचालन ब्रह्माकुमारी पूनम बहन, जयपुर ने किया। इन्दौर जोन की जोनल इन्चार्ज ब्रह्माकुमारी आरती बहन ने सामूहिक योगाभ्यास कराया। □

माउंट आबू: मीडिया कार्यशाला में सम्बोधित करती हुई ब्र.कु. जानकी दादी जी।

धार्मिक नेताओं एवं धर्मवेत्ताओं का स्नेह-मिलन

माऊंट आबू: 30 सितम्बर। "सर्व के सहयोग से सुखमय संसार" महासम्मेलन के अन्तर्गत धार्मिक नेताओं की कार्यशाला में राजयोगिनी दादी निर्मल पुष्पा जी ने अपनी ज्ञान गंभीर वाणी में बताया कि आज का संसार दुःखमय संसार है। कदम-कदम पर पद्म के बजाए तनाव ही तनाव है। आज मानव चिन्ता की चित्ता पर बैठा हुआ है। अनेक रोगों से ग्रस्त है। विज्ञान की मदद से विश्व के भौतिक स्वरूप को मानव बदल सकता है, लेकिन स्वयं के संस्कारों को दिव्यीकरण नहीं कर सकता है। जब तक स्वयं के संस्कारों का दिव्यीकरण अथवा परिवर्तन नहीं होगा तब तक संसार नहीं बदल सकता है। संसार को बेहतर बनाने के लिए आध्यात्म की शक्ति से हमें अन्तर्मन में ज्योति जगानी होगी, दृष्टि और वृत्ति को बदलना होगा, कर्मों को श्रेष्ठ बनाना होगा।

श्री चेतनदेव आश्रम, कनखल, हरिद्वार के स्वामी परमानन्द जी उदासीन ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि विज्ञान सुविधा दे सकता है, लेकिन आत्मिक सुख-चैन नहीं दे सकता है, वह अन्तर्मुख होने से ही मिल सकता है। आध्यात्म की शरण में जाने से ही, आत्म-निष्ठ होने से ही सुख मिल सकता है। आगे आपने कहा कि भोगवाद को ठुकराकर भगवान् की शरण को स्वीकार करने का ब्रह्माकुमारी बहनों ने जो कार्य करके दिखाया है, वो बहुत ही सराहनीय है और मैं उसी बात से ही विशेष प्रभावित हूं।

आध्यात्म की सुगन्ध लेकर आए हुए सच्चा बाबा आश्रम, इलाहाबाद के स्वामी गोपाल जी महाराज ने कहा कि विज्ञान की चेष्ठा है मृत्यु को वश करने की, तमाम जीवन जवान बने रहने की, लेकिन जब तक विकारों को वश में नहीं किया तब तक सुख-चैन मिल नहीं सकता है। मन की कामनाओं को संयम से समाप्त किया जा सकता है। मन आध्यात्म की शक्ति से निर्मल

माऊंट आबू: साइंस, साइलेन्स तथा संतुष्टता विषय पर हुई कार्यशाला में अपने विचार रखते हुए ब्र.कु. ओमप्रकाश जी।

होता है। अपने को सुधारने से दुनिया में सुधार आएगा। नैतिकता को धारण करके ही भारत विश्व को आध्यात्म प्रकाश देने वाला बन सकता है।

कार्यशाला की अध्यक्षा राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी दादी हृदयमोहिनी जी ने कहा कि यह बात सर्वथा स्वीकार्य है कि आध्यात्मिकता ही विश्व परिवर्तन का आधार है और आध्यात्म की नींव है पवित्रता। परन्तु पवित्रता की शक्ति लाएं कैसे? बातें सुन-सुनकर सभी लोग थक गए हैं। अब सभी अनुभव करना चाहते हैं। इसलिए आज ज़रूरत है आध्यात्मिक नेताओं को अब आदर्श बनकर औरों में हिम्मत उमंग-उल्लास भरना है। हिम्मत और उमंग से असम्भव भी सम्भव हो जाता है। विश्व को सुखमय बनाने का कार्य भी सम्भव होगा, जब दृढ़ संकल्प रहेगा कि पहले स्वयं परिवर्तित बनूं। जैसे दीपक से दीपक जलाकर दीवाली मनाई जाती है वैसे ही स्वयं परिवर्तन से विश्व परिवर्तन अवश्य ही होगा।

कार्यक्रम का संचालन ब्रह्माकुमारी मनोरमा, इलाहाबाद ने किया। □

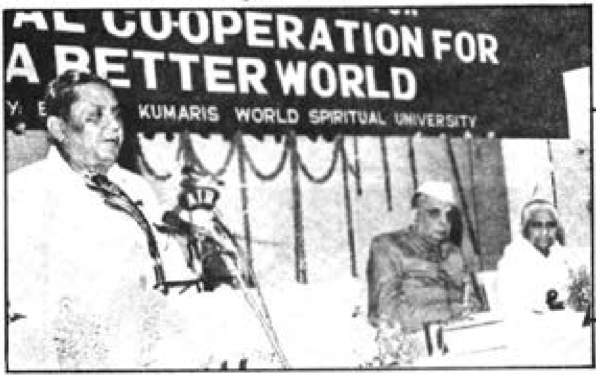

माऊंट आबू: 'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार' सम्मेलन के समापन समारोह में अपने उद्गार प्रकट करते हुए केन्द्रीय वित्त राज्यमंत्री भ्राता बी.के. गदवी जी।

"ओमशान्ति और वसुधैव कुटुम्बकम्" की भावना को व्यवहारिक जीवन में लाएं

□ बी.के. गदवी, वित्त राज्यमंत्री

माऊंट आबू: 30 सितम्बर। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के मुख्यालय में आयोजित "सर्व के सहयोग से सुखमय संसार" सम्मेलन में भारत सरकार के वित्त राज्यमंत्री माननीय बी.के. गदवी जी ने कहा कि वर्तमान कलियुग के समय पर संगठन में शक्ति है। संगठन अर्थात् किसी उद्देश्य की प्राप्ति के लिए संगठित लोगों की अपनी-अपनी शक्ति का प्रयोग। बेहतर संसार की संरचना के लिए सर्व लोगों का सहयोग प्राप्त करने के लिए वातावरण का निर्माण करना पड़ेगा।

अपनी भावनाओं को विशाल बनाना पड़ेगा। संकुचित भावना सहयोग को बढ़ावा नहीं दे सकती है। भारतीय संस्कृति में ओमशान्ति और वसुधैव कुटुम्बकम् का बहुत महत्व है। परन्तु केवल जपने से काम नहीं चलेगा, इन्हें जीवन में अमल करना पड़ेगा। यहां आने से विश्राम एवं शान्ति की अनुभूति हुई। ओमशान्ति में समस्त समस्याओं का समाधान करने की क्षमता है। क्योंकि पूरे ब्रह्माण्ड का तत्व ओमशान्ति में ही समाहित है।

संस्था की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी ने सम्बोधित करते हुए कहा कि सर्वशक्तिवान्, सर्वगुणों से भरपूर भोलानाथ शिव अरावली की पहाड़ियों में स्थित माऊंट आबू के अन्तर्राष्ट्रीय मुख्यालय पर ईश्वरीय ज्ञान एवं राजयोग की शिक्षा देकर नैतिक एवं मानवीय मूल्यों की पुनर्स्थापना का कार्य कर रहे हैं। इन गुणों की धारणा से ही स्वर्णिम सवेरा अथवा सुखमय संसार का अभ्युदय होगा। अतएव इस बेहद विशालतम निर्माण के कार्य में स्वयं को पहचानकर निर्माण अर्थात् नम्र बनें। अशुद्ध देह अहंकार का त्याग करो। तब ही विश्व नव-निर्माण के इस ईश्वरीय कार्य में सहयोगी बन स्वयं का एवं विश्व का कल्याण कर सकते हैं।

अल्पसंख्यक आयोग, नई दिल्ली के सदस्य माननीय होमी तल्लियारखान जी ने कहा कि हमें महात्मा गांधी के सत्य एवं अहिंसा के सिद्धान्त को सदैव ध्यान में रखना है। जनसाधारण के सहयोग से, आपसी तालमेल से और सह अस्तित्व के वातावरण से ही विश्वशान्ति स्थापित की जा सकती है। अविश्वास, भ्रान्ति, गलतफहमी आदि मानवता के लिए खतरनाक हैं। उन्होंने कहा कि जनसाधारण के सहयोग के लिए मानवता पूर्ण सम्बंध, प्रेम, शान्ति और एकता की आवश्यकता है।

सम्मेलन को 'प्यूरिटी' के सम्पादक ब्रह्माकुमार बृजमोहन, दिल्ली ने भी सम्बोधित किया।

कार्यक्रम का संचालन ब्रह्माकुमार अमीरचन्द जी, चन्डीगढ़ ने किया। राजयोग शिक्षिका ब्रह्माकुमारी शीलू बहिन ने सामूहिक योगाभ्यास कराया। ब्रह्माकुमार मृत्युंजय ने प्रस्ताव पढ़ा एवं अल्पसंख्यक आयोग दिल्ली के सदस्य होमी तल्लियार-खान ने अनेमादित किया तथा सर्व प्रतिनिधियों की सहमति से प्रस्ताव पारित हुआ। □

माऊंट आबू: वैज्ञानिक, तकनीकिज्ञ तथा आध्यात्मवेत्ता महासम्मेलन के तीसरे खुले अधिवेशन में सम्बोधित करते हुए भ्राता जी. रामाचन्द्रन, आई.पी.एस. महानिदेशक (भ्रष्टाचार निरोध), गुजरात राज्य।

माऊंट आबू: वैज्ञानिक, तकनीकिज्ञ तथा आध्यात्मवेत्ता महासम्मेलन के द्वितीय खुले अधिवेशन को सम्बोधित करते हुए (बाएं से) प्रो. एस. सम्पत, अध्यक्ष आर.ए.सी. रक्षा मंत्रालय दिल्ली, डॉ. एम.सी. मोदी, प्रसिद्ध आई सर्जन, बंगलौर, भ्राता एस.के. मजुमदार, अतिरिक्त निदेशक, केन्द्रीय खाद्य तथा तकनीकी अनुसंधान संस्थान, मैसोर, एस.पी. पंडया, पूर्व निदेशक फिजीकल रिसर्च लेबोरेट्री, अहमदाबाद तथा भ्राता जे. वेकन्टेश्वरालु जी।

माऊंट आबू: वैज्ञानिकों, तकनीकिज्ञों तथा आध्यात्मवेत्तों के महासम्मेलन के उद्घाटन समारोह में अपने विचार प्रकट करते हुए (बाएं से) भ्राता सनत मेहता, अध्यक्ष सरदार सरोवर नर्मदा निगम लि. अहमदाबाद, भ्राता पी.आर अय्यर, कार्यकारी निदेशक, डनलप इंडिया लि. कलकत्ता, भ्राता ए.के.डे. अध्यक्ष अणु शक्ति सामंजस्य बोर्ड, बम्बई तथा भ्राता चन्द्रशेखर, पंचायत राज्यमंत्री (आ.प्र.)।

देहली में ब्र.कु.ई.वि. विद्यालय की ओर से रामलीला के अवसर पर निकाली गई 'सर्वात्माओं का पिता एक' झांकी का दृश्य। इसे लाखों लोगों ने देखा।

"सर्व के सहयोग से सुखमय संसार" महासम्मेलन में पारित प्रस्ताव

"सर्व के सहयोग से सुखमय संसार" का त्रिदिवसीय राष्ट्रीय महासम्मेलन माऊंट आबू में 28 से 30 सितम्बर, 1989 तक हुआ। सारे विश्व में अप्रैल 1988 में एक परियोजना का शुभारम्भ किया था जिसका नाम रखा था "सर्व के सहयोग से सुखमय संसार" और संयुक्त राष्ट्रसंघ ने भी इस परियोजना को 'शान्ति दूत' का चिन्ह देकर अपनी मान्यता प्रदान की थी।

इस महासम्मेलन में भारत के विभिन्न प्रान्तों से आए हुए 1500 से भी अधिक प्रतिनिधियों ने भाग लिया। चार खुले अधिवेशन तथा 12 कार्यशालाओं में सभी वर्ग के प्रसिद्ध विद्वान् वक्ताओं ने अपने विचार प्रस्तुत किए। इनमें भाग लेने वालों में से मुख्यतः धार्मिक नेता, राजनैतिक नेता, प्रशासक वर्ग, शिक्षाविद्, मीडिया तथा समाजसेवी संस्थाओं से सम्बंधित लोग सम्मिलित थे।

सभी विद्वान् वक्ताओं ने वर्तमान समय सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, नैतिक तथा पर्यावरण की विश्वव्यापी समस्याओं की ओर सभी का ध्यान आकर्षित कराया। विद्वान् वक्ताओं की यही सर्व-सम्मति से मान्यता थी कि, समस्त समस्याओं का मूल कारण नैतिक, मानवीय अथवा आध्यात्मिक मूल्यों की कमी है।

महासम्मेलन के समाप्ति समारोह के अवसर पर उपस्थित महानुभावों ने सर्वसम्मति से घोषित किया कि—

- आध्यात्मिक क्रान्ति लाने की अत्यन्त आवश्यकता है तथा अश्लीलता, हिंसा, इन्द्रियों के सुखों और कुरितियों को त्यागकर हमें उच्च विचार और दिव्यता को उच्च स्तर तक पुनः स्थापना करनी है।
- इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए हमें सुखमय संसार की शुभ संकल्पना की धारणा अपने-आपमें स्थापित करनी है तथा इसके लिए हमें तीन बातों का मुख्यतः ध्यान रखना है—सहयोग, रचनात्मकता तथा पारस्परिक आदान-प्रदान की भावना।
- इस जीवन की महायात्रा में प्रत्येक मानव को केवल यात्री न बकर अपने को नाविक समझना है। चाहे वे धार्मिक नेताएं हों, शिक्षाविद्, राजनैतिक, प्रशासक, मीडिया तथा समाजसेवी संस्थाओं से सम्बन्धित हों। उन्हें अपने व्यक्तिगत को सुधार कर सभी के समक्ष आदर्श प्रस्तुत करना है और अन्य सभी व्यक्तियों को भी मानवीय मूल्यों को अपने जीवन में अपनाने की प्रेरणा देनी है।
- उपलब्ध सभी प्रकार के साधनों द्वारा हमें आम जनता को वर्तमान समय में व्याप्त काम, क्रोध, लोभ आदि विकारों से होने वाली हानियों से एवं अपने जीवन में मानवीय मूल्यों और स्नेह की भावना को अपनाकर होने वाले लाभों से अवगत करा जागृति उत्पन्न करती है।
- वर्तमान शिक्षा प्रणाली में राजयोग अभ्यास को उचित स्थान प्रदान करना है। समस्त मानव जाति में विचार व सादा जीवन' की भावना को अपनाने की प्रेरणा देनी है ताकि वे समाज की निःस्वार्थ सेवा कर सकें और सुखमय संसार बनाने में अपना योगदान दे सकें। □

माऊंट आबू: 'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार' सम्मेलन के अंतर्गत आयोजित प्रशासकों के लिए कार्यशाला को सम्बोधित करती हुई ब्र.कु. प्रकाशमणि जी।

"विश्वशान्ति के लिए हमें आध्यात्मिकता का उपयोग करना है"

माऊंट आबू: 1 अक्तूबर, 1989। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित "सर्व के सहयोग से सुखमय संसार" योजना के अन्तर्गत "वैज्ञानिक, तकनीकज्ञों और आध्यात्मवेत्ताओं का एक तीन दिवसीय महासम्मेलन प्रारम्भ हुआ। इस सम्मेलन में 1000 से भी अधिक प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

अल्पसंख्यक आयोग, नई दिल्ली के सदस्य भ्राता तल्लियारखान ने इस अवसर पर वैज्ञानिकों से आग्रह किया कि वे विश्वशान्ति और मानव कल्याण के लिए अधिकाधिक कार्य करें। उन्होंने कहा कि पंडित जवाहरलाल नेहरू के सपनों के आधार पर भारत ने विज्ञान में आशातीत प्रगति की है और उनका इस प्रकार का सपना साकार किया है। किन्तु आवश्यकता इस बात की है कि हम अपने कार्यों से देश में व्याप्त गरीबी, बेरोजगारी और अशिक्षा को दूर करने के लिए कार्य करें।

मध्यप्रदेश सरकार के ऊर्जा विभाग के मुख्य सचिव भ्राता एस.एन. राव जी ने कहा कि आज पूरा विश्व आणविक शस्त्रों और अन्तरिक्ष युद्ध तथा पर्यावरण प्रदूषण के खतरों में गिरता जा रहा है। उन्होंने कहा कि हम विश्व में शान्ति तो लाना चाहते हैं किन्तु उसके लिए इस प्रकार के विपरीत कार्य हो रहे हैं जिससे विश्वशान्ति की कल्पना साकार नहीं हो पा रही है। यदि इसी प्रकार के विपरीत कार्य होते रहे तो विश्व में कभी भी शान्ति स्थापित नहीं की जा सकती है। आज विज्ञान के प्रयोग निजी स्वार्थों के लिए करने के कारण विश्व में तनाव बढ़ रहा है। आपने कहा कि विश्व में शान्ति लाने के लिए हमें आध्यात्मिकता का सहयोग लेने की आवश्यकता है। आध्यात्मिकता का सन्देश ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय द्वारा जिस प्रकार से विश्व में प्रसारित किया जा रहा है उससे पूरे विश्व को बड़ी उम्मीदें हैं।

विद्युत मण्डल, नई दिल्ली के पूर्व मुख्य अभियन्ता भ्राता राजकुमार मित्तल जी ने कहा कि सुखमय संसार के निर्माण में वैज्ञानिकों, तकनीकज्ञों और आध्यात्मिकता के क्षेत्र में काम करने वाले लोगों को मिलकर आपसी सहयोग से विश्व-शान्ति के प्रयास करने होंगे।

ब्रह्माकुमारी सरला, निर्देशिका, गुजरात क्षेत्र, अहमदाबाद ने कहा कि आज विश्व ने विज्ञान के क्षेत्र में बहुत अधिक प्रगति की है जिससे एक-दूसरे देश के काफी नजदीक आ गए हैं। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिकों को मानव-कल्याण के लिए नए अनुसंधान करने की आवश्यकता है तथा इस बात पर विचार करना चाहिए कि इस विश्व को किस प्रकार एक अच्छा विश्व बनाया जा सके जहां लोगों में तनाव और भय का वातावरण नहीं रहे।

लन्दन की वरिष्ठ पत्रकार कुमारी निक्की, मालेट डी कार्टेरिट ने वैज्ञानिकों से आध्यात्मिकता के सहयोग से एक अच्छे विश्व की संरचना पर बल दिया और कहा कि आज की परिस्थितियों में जहां भारी तनाव और अशान्ति फैली हुई है, इन सभी समस्याओं का हल केवल भारत से ही मिल सकता है एवं विश्वशान्ति के इन प्रयासों में संलग्न ब्रह्माकुमारी आश्रम जैसी धार्मिक संस्थाओं को आगे आकर कार्य करना चाहिए।

ऑस्ट्रेलिया की बी.के. मार्ग्रेट ने इस बात की सराहना की कि भारत में अनेक संस्थाएं लोगों के मन को परिवर्तन कर उन्हें आध्यात्मिकता की ओर प्रेरित कर रही हैं जो कि आज के वातावरण में बहुत ही उपयोगी है।

समारोह की अध्यक्षता करते हुए संस्था की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी दादी जानकी जी ने कहा कि वैज्ञानिकों ने विज्ञान के क्षेत्र में तो काफी प्रगति की है किन्तु इसके साथ ही विज्ञान के दुरुपयोग से आज विश्व में अशान्ति और तनाव का खतरा बढ़ता जा रहा है। वैज्ञानिकों को इन खतरों को रोकने के लिए और प्राकृतिक संतुलन बनाए रखने के लिए आध्यात्मिकता का सहारा लेकर कार्य करना होगा। आपने आशा प्रकट की कि इस सम्मेलन में कई ठोस बातें सामने आएंगी जो कि विश्वशान्ति के प्रयासों के लिए महत्वपूर्ण होंगी।

कार्यक्रम का संचालन एवं सम्मेलन के बारे में विस्तृत जानकारी ब्रह्माकुमारी ऊषा, राजयोग शिक्षिका, बम्बई ने दी। □

मॉस्को: ब्र.कु. चक्रधारी बहिन इरिना मकरोवा को राखी बांधती हुई।

"बेहतर विश्व के निर्माण के लिए आध्यात्म एवं विज्ञान का समन्वय आवश्यक"

□ प्रो. एस. सम्पत

माऊंट आबू: 2 अक्तूबर, 1989। प्रजापिता ब्रह्मा-कुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के मुख्यालय माऊंट आबू पर आयोजित "वैज्ञानिक, तकनीकिज्ञों एवं आध्यात्मवेत्ता" महासम्मेलन के सांयकालीन अधिवेशन के मुख्य अतिथि, भारत सरकार के रक्षा मन्त्रालय, आर.ए.सी. के अध्यक्ष माननीय एस. सम्पत जी ने कहा कि अनुसंधान संस्थाओं में अनुसंधान का लक्ष्य स्पष्ट हो तो सफलता शीघ्र मिलती है। पहले की अपेक्षा आज अनुसंधान कम हो रहे हैं। अनुसंधान में रचनात्मकता को महत्व देना बहुत आवश्यक है। अतएव इन संस्थाओं में कार्यरत वैज्ञानिकों को आध्यात्मिकता को भी समझना चाहिए ताकि अनुसंधान रचनात्मक हो और उसका परिणाम विश्व की सुख समृद्धि के लिए काम आए। आध्यात्मिकता के अभाव में आज ऐसे अनुसंधान हो गए हैं जिनसे विनाशकारी सामग्री का भी निर्माण हुआ है। इस सामग्री ने विश्व में भय का वातावरण बना दिया है। किसी भी अनुसंधान के लिए नए-नए विचारों की, तरीकों की जरूरत होती है। उन विचारों को क्रियात्मक स्वरूप देने से ही परिणाम सामने आता है। बेहतर दुनिया के निर्माण के लिए आध्यात्मिकता और विज्ञान का समन्वय आवश्यक है। वर्तमान समय बहुत समस्याएं हैं परन्तु विज्ञान और आध्यात्म के समन्वय से स्थापित सुखमय संसार में ये समस्याएं नहीं रहेंगी।

सम्मेलन की अध्यक्षा संस्था की सह-मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी चन्द्रमणि जी ने कहा कि शान्ति की शक्ति से सभी शक्तियां प्रभावित होती हैं। जीवन में सम्पूर्णता लाने के लिए सर्वशक्तियों की आवश्यकता है। प्रकृति की शक्तियों को रचनात्मक रूप से प्रयोग करने के लिए आध्यात्मिक शक्ति की आवश्यकता पड़ती है, अतः शोध संस्थानों में कार्यरत वैज्ञानिक एवं अन्य लोग आध्यात्मिकता को अपनावें तो वे कई गुना रचनात्मक कार्य कर सकते हैं। परमपिता परमात्मा से सम्बंध जोड़ने से बुद्धि एकाग्र होती है एवं इस एकाग्रता द्वारा विश्व-एकता, विश्व-बन्धुत्व की भावना सुदृढ़ होती है। इससे चिन्ता, भय, घबराहट आदि दूर होकर शान्ति की ओर लोग अग्रसर होंगे।

बंगलौर के प्रसिद्ध नेत्र चिकित्सक व विश्व प्रसिद्ध गिनीज बुक में स्थान पाने वाले डॉ. एम.सी. मोदी जी ने कहा कि वर्तमान समय आध्यात्मिक अथवा आत्म-ज्ञान के नहीं होने से अन्तर्रात्मा नेत्रहीन हो गई है। शारीरिक अंगों का शल्य चिकित्सा के द्वारा प्रत्यारोपण हो जाता है परन्तु मानवीय मूल्यों से रहित व्यक्तियों में ज्ञान नेत्र का प्रत्यारोपण करना अति कठिन है। यह कार्य ब्रह्माकुमारी संस्थान द्वारा किया जा रहा है जो कि बहुत ही सराहनीय है। योग भी एक विज्ञान है परन्तु बहुत लोगों को मालूम नहीं कि योग क्या है? अतएव इस राजयोग का सर्व के लिए सीखना एवं प्रयोग करना विश्व कल्याण के लिए अति आवश्यक है।

अहमदाबाद के भौतिक शोध प्रयोगशाला के भूतपूर्व निदेशक प्रोफेसर एस.पी. पण्डया जी ने कहा कि हमारे देश के शोध संस्थानों में उपयुक्त वातावरण तथा पर्याप्त अवसर न मिलने के कारण हमारे प्रतिभा सम्पन्न वैज्ञानिक विदेशों में चले जाते हैं। प्राकृतिक परिवेष के साथ उपयुक्त सामाजिक वातावरण तथा परस्पर सहयोग आवश्यक है। अतएव शोध संस्थानों में आध्यात्मिकता का लाना भी बहुत जरूरी है।

जोधपुर के सेन्ट्रल एरिद जोन रिसर्च सेन्टर के निदेशक श्री जे. वेंक्टेश्वरलु जी ने कहा कि खाद्य पदार्थों के उत्पादन में देश में प्रगति हुई है परन्तु अन्य क्षेत्रों में गुणात्मकता में कमी दिखाई देती है। भारतीय अनुसंधान संस्थानों ने नई खोजों के लिए अच्छा खर्च किया है लेकिन उनकी खोजों की जानकारी एवं परिणाम अभी गांव-गांव तक नहीं पहुंचे हैं। अतः ऐसा कुछ प्रयत्न किया जाना चाहिए कि वह जन-जन के लिए उपयोगी बन सकें। रचनात्मकता में ऐसी शक्ति है जो श्रेष्ठ कार्य करवा सकती है। आध्यात्मिक एवं भौतिक शक्तियां मिलकर सुखमय संसार का निर्माण कर सकती हैं।

'वर्ल्ड रिन्युअल स्प्रिचुअल' ट्रस्ट के मेनेजिंग ट्रस्टी ब्रह्माकुमार रमेश शाह ने विभिन्न संस्थानों के आंकड़े प्रस्तुत करते हुए बताया कि राजयोग के अभ्यास से उत्पादन क्षमता बढ़ती है। योगाभ्यास से हमारी कार्यक्षमता में वृद्धि के साथ ही परस्पर सद्भाव एवं प्रेम भाव का उदय भी होता है।

मैसूर के केन्द्रीय खाद्य और तकनीकी शोध संस्थान के निदेशक डॉ. एस.के. मजूमदार ने कहा कि प्रयोगशालाओं एवं शोध संस्थानों में कार्यरत वैज्ञानिकों एवं अन्य व्यक्तियों को विज्ञान का प्रयोग रचनात्मक दिशा में करना चाहिए विध्वंसात्मक कार्यों के लिए इसका प्रयोग नहीं करें। नई खोजों के लिए एकाग्रता की शक्ति की वृद्धि करने के लिए आध्यात्मिक ज्ञान को अपनावें।

सम्मेलन का संचालन दिल्ली की राजयोग शिक्षिका ब्रह्माकुमारी आशा बहन ने किया। भारत अर्थ मूवर्स, मैसूर के सहायक प्रबन्धक भ्राता राममूर्ति ने धन्यवाद दिया। □

''आणविक शस्त्रों पर होने वाले खर्चों को कम कर विश्व के रचनात्मक कार्यों में लगावें''

☐ सनत मेहता

माऊंट आबू: 2 अक्तूबर, 1989। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के मुख्यालय माऊंट आबू में आयोजित ''वैज्ञानिक, तकनीकिज्ञ एवं आध्यात्मवेत्ता महासम्मेलन'' का उद्‌घाटन माननीय सनत मेहता, अध्यक्ष, सरदार सरोवर नर्मदा निगम लि. द्वारा दीप प्रज्जवलित कर किया गया। अपने उद्‌घाटन भाषण में उन्होंने कहा कि आज संसार में विविध बातें हो रही हैं,कुछ अच्छी हैं, कुछ बुरी हैं। हमारी पूर्व मान्यताएं एवं विचारधारा गिर गई है। विज्ञान ने सभी क्षेत्रों में असीमित प्रगति की है परन्तु साथ ही कई समस्याओं ने विकराल रूप ले लिया है। यदि हम अणुशस्त्रों पर होने वाले खर्च को कम कर वही धन रचनात्मक कार्यों में लगावें तो विश्व का विकास अधिक होगा। अमेरिका के एक अणुबम पर होने वाले खर्च का आधा भाग सारे विश्व में मलेरिया रोग को समाप्त कर सकता है। मानव को बदलने के लिए करुणा और दृढ़ता दोनों चाहिए। सुखमय संसार के लिए सभी लोगों को मिलकर कार्य करना पड़ेगा। अन्त में आपने सम्मेलन की सफलता की कामना की।

सम्मेलन की अध्यक्षा संस्था की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी दादी प्रकाशमणि जी ने कहा कि साइंस मानव को बाह्य सुख के साधन देती परन्तु आध्यात्मिकता मनुष्य को आन्तरिक खुशी व आनन्द प्रदान करती है और चरित्र का निर्माण करती है। चरित्र के आधार पर यह विश्व सुखमय बनेगा। अतः आज अपने समाज में, कारखानों में, विद्यालयों तथा घर-घर में आध्यात्मिक शिक्षा देने की आवश्यकता है। बापू गांधी जी का भी बापू परमपिता परमात्मा हमें डबल अहिंसक बना रहा है,अतएव नवरात्रि के अवसर पर आसुरी संस्कारों को समाप्त कर दिव्यगुणों से अपने-आपको सम्पन्न बनाओ।

सम्मेलन के मुख्य अतिथि माननीय ए.के.डे., अध्यक्ष, एटॉमिक इनर्जी रेगुलेटरी बोर्ड, बम्बई ने कहा कि विज्ञान और आध्यात्म एक-दूसरे के विरोधी नहीं हैं किन्तु सहयोगी हैं। इनके सही प्रयोगों से हम संसार में सुख-शान्ति की स्थापना कर सकते हैं। इस दृष्टि से यह वैज्ञानिकों, तकनीकिज्ञों और आध्यात्मवेत्ताओं का सम्मेलन निश्चित रूप से मानव जाति की उन्नति में सहायक होगा।

सम्मेलन के विशेष अतिथि आन्ध्रप्रदेश के पंचायती राज्यमंत्री ने इस अवसर पर कहा कि मानव को अपने लिए जीना कोई बड़ी बात नहीं। यह तो जानवर भी करते हैं। हमें इससे ऊपर सोचकर सर्व मानव जाति के कल्याणर्थ कार्य करना पड़ेगा, तब ही सुखमय संसार ला सकेंगे।

माननीय पी.आर. अय्यर, निदेशक, डनलप इंडिया लि. कलकत्ता ने कहा कि असफलता होने पर या जीवन में उत्थान या पतन होने पर तनाव उत्पन्न नहीं होना चाहिए तब ही हम सहयोग ले सकते और दे सकते हैं। आज सम्पूर्ण मानव जाति में नैतिकता का संकट छाया हुआ है। जब तक अनैतिकता को दूर नहीं करते तब तक हमारा उत्थान नहीं हो सकता है। विश्व,विनाश की ओर बढ़ता जावेगा अतः मानवीय मूल्यों की स्थापना के लिए सभी को मिलकर कार्य करना है।

सम्मेलन में संस्था के मुख्य प्रवक्ता ब्रह्माकुमार जगदीश चन्द्र जी ने कहा कि मानसिक प्रदूषण ने ही संसार में जनसंख्या की स्थिति विस्फोटक कर दी है। इसके कारण मानव की आवश्यकता बढ़ी और आवश्यकता की पूर्ति हेतु बड़े-बड़े उद्योगों की स्थापना हुई। उद्योगों से पर्यावरण प्रदूषण बढ़ा। इस प्रकार एक समस्या का हल दूसरी समस्या उत्पन्न करता गया। अतएव इन सभी समस्याओं के समाधान एवं जीवन में मानवीय गुणों को लाने के लिए आध्यात्मिकता की अति आवश्यकता है। अतः राजयोग के द्वारा स्वयं को पहचानें। विज्ञान और आध्यात्म के समन्वय से ही हम सुखमय संसार की स्थापना कर सकते हैं।

सम्मेलन में सम्मेलन के महासचिव ब्रह्माकुमार निर्वैर जी ने कहा कि हर मानव के अन्दर अच्छाइयां एवं सद्‌गुण हैं परन्तु बुराइयों ने उन्हें छिपा रखा है। अतएव राजयोग की अनुभूति से बुराइयों को निकाल सद्‌गुणों को प्रत्यक्ष जीवन में लावेंगे तो स्वयं भी संतुष्ट तथा विश्व को भी बेहतर बना सकेंगे।

सम्मेलन में अहमदाबाद से पधारे ब्रह्माकुमार मोहन सिंघल जी ने सम्मेलन का लक्ष्य स्पष्ट किया। ब्रह्माकुमारी मोहिनी बहन, माऊंट आबू ने सामूहिक योगाभ्यास कराया। कार्यक्रम का आरम्भ अहमदाबाद की कुमारी किरण के नृत्यगान से हुआ। कार्यक्रम का संचालन भ्राता अशोक गाबा, माऊंट आबू ने किया। ☐

"चेतना, जीव और जगत् तथा उनकी उत्पत्ति"

माऊंट आबू: 2 अक्तूबर, 1989। यह संसार, और इसकी जड़ और चैतन्य हर संरचना अनादि काल से चली आई है और इसकी व्युत्पत्ति एवं अंत के बारे में विज्ञान अभी तक खोज के लिए भटक रहा है। आध्यात्मिकता द्वारा ही इस सत्य की तह तक पहुंचा जा सकता है।

देश भर से पधारे अनेक वैज्ञानिकों ने "सुखमय संसार के लिए वैज्ञानिकों, तकनीकिज्ञों एवं आध्यात्मवेत्ताओं के सहयोग" पर आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन के अन्तर्गत "चेतना, जीव और जगत् तथा उनकी उत्पत्ति" विषय पर आयोजित एक कार्यशाला में गंभीर परिचर्चा की। परिचर्चा में भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण विभाग, भोपाल के रिटायर्ड निदेशक श्री श्यामदास बेनर्जी ने जीव, जगत् और परमात्मा, क्रिया, प्रतिक्रिया और अन्तक्रिया पर अद्वैतवाद से लेकर आधुनिक विज्ञान के मतानुसार विभिन्न सिद्धान्तों पर प्रकाश डाला। अहमदाबाद के प्रो. एस.पी. पण्डया, कर्नाटक विश्वविद्यालय के भूविज्ञान विभाग के निदेशक, डॉ. वी.सी. चवाड़ी, दिल्ली के सहायक प्रोफेसर, कम्प्यूटर विज्ञान के डॉ. विनय मयत्री, कलकत्ता के इंजीनियर श्री बी.के. सिंह,बंगलौर के विमानन चिकित्सा संस्थान के वैज्ञानिक बी.के. सूर्यनारायण जी ने भी परिचर्चा में अपने विचार व्यक्त किए। प्रेस ट्रस्ट ऑफ इंडिया, नई दिल्ली के विज्ञान सम्पादक, श्री के.एस. जयरामन ने जीव विज्ञान के आधार पर मानव एवं जीव सृष्टि की व्युत्पत्ति के बारे में विभिन्न प्रकार के जीव-संरचना द्वारा होने वाले प्रभावों का वर्णन करते हुए कहा कि चेतना एवं विभिन्न चरित्रों के अन्तर का ज्ञान अत्यन्त रहस्यमय है जिसे आत्मचेतना द्वारा ही सम्पूर्णतः समझा जा सकता है।

गांधी नगर के प्लाजमा रिसर्च इंस्टीट्यूट के निदेशक पद्मश्री प्रोफेसर पी.के. काव ने मुख्य अतिथि के पद से बोलते हुए कहा कि मानव के आत्मोत्थान में विज्ञान सहायक हो सकता है। उन्होंने अणु ऊर्जा, इलेक्ट्रॉन सम्बंधी तत्वों के आधार पर कहा कि जीवन विभिन्न तत्वों का संगठित रूप है जो उत्पत्ति, वृद्धि, प्रजनन और मृत्यु की प्रक्रिया से गुजरता है। परन्तु संसार में कोई वस्तु कभी नष्ट नहीं होती बल्कि उसका मात्र रूपांतरण हो जाता है। अनेक वैज्ञानिकों ने प्रश्नोत्तर करके परिचर्चा को रोचक बनाने के साथ-साथ कई नए तथ्यों पर प्रकाश डाला कि न्यूरोलोजी विज्ञान के हिप्नोसिस आदि क्रियाओं द्वारा आत्मा पर शोध चल रहा था तथा क्रिलियन्स फोटोग्रॉफी, जिससे विभिन्न सूक्ष्मातिसूक्ष्म रोगाणुओं के चित्र लिए जाते हैं, उससे आत्मा का चित्र भी खींचने का प्रयास हो रहा है।

कार्यशाला के अध्यक्ष राजयोग केन्द्र, बेलगाम के इन्चार्ज ब्रह्माकुमार महादेव ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि जीव, जड़ और चेतन का पूर्ण समन्वित रूप है और सम्पूर्ण जड़, प्रकृति और चैतन्य जीवों के समग्र संसार का संचालनकर्ता परमपुरुष परमपिता परमात्मा है। कर्नाटक के राजयोग केन्द्रों की निदेशिका दादी हृदयपुष्पा जी ने अपने आशीवर्चन में कहा कि आत्मा को परमात्मा से जोड़कर कार्य करें तो उन्नति और सफलता प्राप्त की जा सकती है।

कार्यशाला का संचालन ब्रह्माकुमारी सुधा, नई दिल्ली ने किया तथा ब्रह्माकुमारी मनोरमा, इलाहाबाद ने सामूहिक योगाभ्यास कराया। □

माऊंट आबू: 'चेतना, जीव और जगत्' विषय पर हुई कार्यशाला में अपने विचार प्रकट करते हुए पद्मश्री प्रो. पी.के. कॉ. निदेशक प्लासमा शोध संस्थान गांधी नगर।

"राजयोग द्वारा रचनात्मकता और कुशलता"

माऊंट आबू: 2 अक्तूबर, 1989। प्रजापिता ब्रह्मा- कुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के मुख्यालय माऊंट आबू में आयोजित "वैज्ञानिक, तकनीकज्ञ एवं आध्यात्मवेत्ता महासम्मेलन" के अन्तर्गत आयोजित कार्यशाला–प्रथम में "राजयोग द्वारा रचनात्मकता और कुशलता" विषय पर एक कार्यशाला में विशेषज्ञों ने विचार व्यक्त किए कि राजयोग से आत्मा की ऊर्जा बढ़ती है जिससे रचनात्मकता और कार्यकुशलता की वृद्धि होती है।

कार्यशाला के मुख्य अतिथि भ्राता ए.एस. आर्विकर, प्राचार्य, इंजीनियरिंग कॉलेज, बीजापुर ने कहा कि आत्मोत्थान द्वारा बुद्धि एवं व्यक्तित्व के विकास से रचनात्मकता बढ़ती है। युवावर्ग के मन को रचनात्मक कार्यों में लगाने हेतु राजयोग का प्रशिक्षण निस्संदेह उल्लेखनीय एवं लाभदायक होगा।

प्रो. जी.जी. बावलादी, प्राचार्य, इंजीनियरिंग कॉलेज, बेलगाम ने कहा कि बेकारी एवं कार्य की असन्तुष्टा से त्रस्त इंजीनियरों एवं प्रतिभावन विशेषज्ञों को राजयोग के माध्यम से सकारात्मक विचारों से समस्याओं के समाधान की चमत्कारी शक्ति मिलती है। तमिलनाडु बिजली बोर्ड, मद्रास के अधीक्षक ,अभियन्ता भ्राता एस. पाक्रिस्वामी तथा बड़ौदा की हेमंत इंडस्ट्रीज के प्रबन्ध निदेशक भ्राता पी.टी. शाह ने मानसिक तनाव के विभिन्न कारणों तथा राजयोग द्वारा उनके निवारण पर प्रकाश डाला।

संचार मंत्रालय, अहमदाबाद के संचालन प्रभारी भ्राता आर.एस. दवे ने कहा कि इनपुट से आउटपुट की प्रगति द्वारा उत्पादकता बढ़ती है। मन में सकारात्मक विचारों द्वारा कुशलता बढ़ती है।

गुलबर्गा के राजयोग शिक्षक ब्रह्माकुमार प्रेम सिंह ने "योगः कर्मशु कौशलम्" का उल्लेख करते हुए विचारों को सही दिशा में संयमित करने पर बल दिया।

ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय, माऊंट आबू के जनसम्पर्क अधिकारी ब्रह्माकुमार करुणा जी ने कहा कि राजयोग द्वारा दैवी गुणों का विकास तथा जीवन-लक्ष्य की प्राप्ति सरल हो जाती है। क्योंकि परमात्मा सर्वशक्तिवान्, सर्वोत्तम और परमपुरुष है और राजयोग द्वारा उससे सम्बंध स्थापित होने से आत्मा में दैवी शक्तियां भरती जाती हैं और मानव देवतुल्य बन जाता है।

राजयोगिनी दादी मनोहर इन्द्रा जी ने कार्यशाला में अपने आशीवर्चन में निरन्तर राजयोगी बनने का आह्वान किया।

ब्रह्माकुमारी कमल, बीकानेर ने सामूहिक योगाभ्यास कराया और ब्रह्माकुमारी मंजु, मद्रास ने कार्यशाला का संचालन किया। □

माऊंट आबू: 'राजयोग द्वारा रचनात्मकता और कुशलता' विषय पर हुई कार्यशाला में बोलते हुए संचार मंत्रालय, अहमदाबाद के संचालन प्रभारी भ्राता आर.एस. दवे जी।

"वैज्ञानिक भी आत्मा को पहचानने का अनुसंधान करें"

□ स्वामी सुन्दर चैतन्यानन्द जी

माऊंट आबू: 3 अक्तूबर, 1989। प्रजापिता ब्रह्मा- कुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के मुख्यालय माऊंट आबू में आयोजित "वैज्ञानिक, तकनीकिज्ञ एवं आध्यात्मवेत्ता महा- सम्मेलन" के प्रातःकालीन अधिवेशन में मुख्य अतिथि आन्ध्रप्रेश के डोलेश्वरम् के स्वामी सुन्दर चैतन्यानन्द जी ने कहा कि कोई भी देश मानवीय मूल्यों एवं चरित्र के अभाव में आगे बढ़ नहीं सकता है। आज संस्कृति और चरित्र को विकसित करने की अति आवश्यकता है। विज्ञान ने मानव को बाह्य जगत् की सुविधाएं

दी हैं लेकिन मनुष्य के मन में उठने वाले द्वन्द, क्रोध, ईर्ष्या, द्वेष, अशान्ति को दूर करने का कोई उपाय विज्ञान के पास नहीं है। यह मानसिक रोग आध्यात्म ही दूर कर सकता है। अतएव हमें विज्ञान को आध्यात्म के समीप लाना है। दोनों मिलकर ही सुखमय संसार बना सकते हैं। वैज्ञानिक भी अपने मन को अन्दर की ओर ले जावें तथा आत्मा को जानने का अनुसंधान करें तो उन्हें भी नई रोशनी मिलेगी तथा अच्छी दुनिया बनाने में वे सहायक होंगे।

सम्मेलन की अध्यक्षा संस्था की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी जी ने कहा कि भौतिक अनुसंधान करने के लिए भी वैज्ञानिकों को एकांत और एकाग्रता की आवश्यकता पड़ती है जिससे वे नई खोज करते हैं। ऐसे ही दिव्यगुणों को अपने जीवन में धारण करने के लिए एकांत और परमपिता परमात्मा पर अपने मन को स्थिर रखना पड़ता है। इस अभ्यास से ही दिव्य शक्तियां प्रकट होती हैं और मानव का दिव्यीकरण करती हैं। यह दिव्यीकरण मन को पवित्र एवं स्वच्छ बनाता है, सर्व कमज़ोरियां समाप्त करता है। अतएव भौतिक साधनों के साथ ही आध्यात्मिक शक्ति का प्रयोग भी हम अपने जीवन में करते चलें तो शीघ्र ही इस धरा पर बेहतर संसार का निर्माण हो जावेगा।

दिल्ली से प्रकाशित 'प्यूरिटी' के सम्पादक ब्रह्माकुमार बृजमोहन जी ने कहा कि 'कल-कारखानों एवं कम्पनियों में विद्यमान वर्तमान प्रबन्ध व्यवस्था में प्रबन्धकों को कई प्रकार के दबाव, झुकाव एवं लगाव से चलना पड़ता है इसलिए उनके जीवन में तनाव बहुत शीघ्र आ जाता है और तनाव के कारण कई बुरे व्यसनों के घेरे में वह फंस जाते हैं जिनका प्रभाव वहां पर कार्यरत व्यक्तियों पर भी पड़ता है। अतएव वर्तमान संदर्भ में हमें प्राचीन काल व्यवस्था के आदर्शों को आज की व्यवस्था में समाहित करने होंगे। कर्म के साथ धर्म को अर्थात् मानवीय मूल्यों तथा चरित्र को व्यवहारिक स्तर पर लाना पड़ेगा। स्वयं को अनुशासित करने से दूसरों को भी अनुशासन में रहना सिखाया जा सकता है। आज की प्रबन्ध व्यवस्था में इन्हीं नैतिक मूल्यों की आवश्यकता है।

सम्मेलन के मुख्य वक्ता गुजरात सरकार के पुलिस महा-निदेशक माननीय जी. रामचन्द्रन ने कहा कि सभी प्रकार के झगड़ों का कारण हमारा मन है क्योंकि मन में ही पहले-पहले ये विचार उत्पन्न होते हैं, अतएव आध्यात्मिक शक्ति से मन को नियंत्रित किया जावे तथा उसे रचनात्मक कार्यों की ओर निर्देशित किया जावे तो सभी प्रकार के झगड़े समाप्त होकर शान्ति का वातावरण बना रहेगा।

भ्राता पी.आर. अय्यर, निदेशक, डनलप इंडिया लि., कलकत्ता ने कहा कि आज भौतिक उपलब्धियों ने मानव में अहंकार भर दिया है जिसके परिणाम भी भयानक हैं। इससे मनुष्य एक-दूसरे के दुश्मन बन गए हैं। प्रतिस्पर्धा और यश प्राप्ति के लिए बड़े-बड़े अपराध हो जाते हैं। पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव बढ़ रहा है। अतएव आज मानवीय मूल्यों को लाने के लिए परस्पर सहयोग, विश्वास, प्रेम आदि गुणों के लिए हमें आध्यात्मिकता को अपनाना ही पड़ेगा तभी हम स्वयं को एवं विश्व को आगे बढ़ा सकेंगे।

सम्मेलन का संचालन ब्रह्माकुमार मृत्युंजय, माउंट आबू ने किया। भ्राता के.जी. बोस, प्रबन्ध निदेशक, शान्ति इंटरमीडिएट कैमिकल्स, हैदराबाद ने धन्यवाद दिया तथा ब्रह्माकुमारी अवधेश, जोनल इन्चांर्ज, भोपाल ने सामूहिक योगाभ्यास कराया। □

माउंट आबू: प्रशासकों के लिए रखी गई कार्यशाला में बोलते हुए सिरोही के कलेक्टर भ्राता जी.एम. नरवानी जी।

बेहतर दुनिया के निर्माण में विज्ञान और आध्यात्म परस्पर सहयोगी बनें

□ स्टीव नारायण

माऊंट आबू: 3 अक्तूबर, 1989। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के मुख्यालय में आयोजित "वैज्ञानिक, तकनीकिज्ञ और आध्यात्मवेत्ता महासम्मेलन" के अन्तर्गत समापन समारोह के मुख्य अतिथि भारत में ग्याना के हाई कमिश्नर माननीय स्टीव नारायण जी ने, "विज्ञान, मानवीय मूल्य और नैतिक सिद्धान्त" विषय पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि आज मानवीय मूल्य ही वास्तविक मंच है जिस पर वैज्ञानिक, तकनीकिज्ञ एवं आध्यात्मवेत्ता एकत्रित हुए हैं। यह आवश्यक नहीं कि वैज्ञानिक पूर्णतः आध्यात्मवादी बन जावे या आध्यात्मवादी पूर्णतः वैज्ञानिक हो जावे परन्तु दोनों ही मिलकर मानवीय मूल्यों को महत्वपूर्ण समझकर व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन में स्थान देने के लिए सहयोगी बनेंगे। विज्ञान ने सुविधाओं की अथाह सम्पदा दी है परन्तु आणविक शस्त्रों से मनुष्य स्वयं ही भयभीत हो गया है। विज्ञान सांसारिक आवश्यकताओं को अधिक महत्व देता है जबकि आज मानव के मनोपरिवर्तन की अधिक जरूरत है जो कि आध्यात्म के द्वारा ही सम्भव है। अतएव यदि वैज्ञानिक एवं तकनीकिज्ञ भी अपने जीवन का आदर्श समाज के समक्ष रखें तो विश्व को सुखमय बनाने की दिशा में बहुत बड़ा सहयोग होगा।

सम्मेलन की अध्यक्षा दिल्ली स्थित सेवाकेन्द्रों की निदेशिका राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी हृदयमोहिनी जी ने कहा कि जीवन में नैतिक मूल्यों को अपनाने हेतु यदि हम भी श्री लक्ष्मी, श्री नारायण का चित्र अपने समक्ष रखें तो हमें प्रेरणा मिलेगी कि इनमें समाहित दिव्यगुणों को हम अपने जीवन में अपनावें। "सर्वगुण सम्पन्न, सोलह कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी, मर्यादा पुरुषोत्तम आदि गुणों से केवल महिमा ही न करें परन्तु स्वयं को भी ऐसा महिमावान बनाने का प्रयत्न करें। सम्मेलन में संस्था की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी दादी प्रकाशमणि जी ने अपने आशीवर्चन में कहा कि विश्व में आध्यात्मिकता को लाने हेतु पहले स्वयं में आध्यात्म को धारण करना है। अपने आत्मा रूपी दीपक को राजयोग से प्रकाशित करेंगे तो विश्व में भी यह रोशनी फैलेगी। सुखमय संसार में भी यह विज्ञान अपने पूर्ण विकसित रूप में होगी। अतः विज्ञान और आध्यात्म का समन्वय ही मानव को मूल्यवान बनावेगा।

सम्मेलन के वक्ता बॉम्बे स्थित नेहरू प्लानेटोरियम के संयुक्त निदेशक, डॉ. जे.जे. रावल ने कहा कि आत्मा क्या है? परमात्मा कौन है? पुनर्जन्म क्या है ये प्रश्न वैज्ञानिकों को हमेशा परेशान करते आए हैं। अलग-अलग समय पर अनेक वैज्ञानिकों ने कई आविष्कार किए हैं। कई वर्ष पहले मान्यता थी कि पृथ्वी मध्य में है परन्तु बाद में पता चला कि सूर्य बीच में है जिसके चारों ओर दूसरे ग्रह चक्कर लगाते हैं। प्राचीन काल में ऋषि-मुनि भी वैज्ञानिक थे वे धनुर्विद्या सिखलाते थे। दवाइयों का ज्ञान रखते थे। ब्रह्माण्ड का उन्हें ज्ञान था। अभी वैज्ञानिक चन्द्रलोक पर पहुंचे हैं परन्तु वे पूर्णतः संतुष्ट नहीं हैं। मंगल, वीनस आदि ग्रहों पर खोज जारी है। अंत में आपने रंगीन स्लाइड्स के माध्यम से ग्रहों की जानकारी प्रदान की।

सम्मेलन के वक्ता करनाल स्थित एन.डी.आर.आई. के प्राचार्य, साईंटिस्ट भ्राता एम.के. जैन ने कहा कि आज भौतिक उपलब्धियां चरमसीमा पर हैं परन्तु निराशा, दुःख, तनाव आदि भी बढ़ते जा रहे हैं। पहले विज्ञान और धर्म को अलग-अलग माना जाता था परन्तु अब महसूस किया जाने लगा है कि दोनों एक साथ चल सकते हैं और संसार को सुखमय बना सकते हैं। सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह ब्रह्मचर्य आदि मानवीय मूल्य ही हैं इनको जीवन में धारण करने से हम सुख, शान्तिमय संसार की ओर बढ़ सकेंगे।

सम्मेलन में संस्था के मुख्य प्रवक्ता ब्रह्माकुमार जगदीश चन्द्र जी ने कहा कि प्रेम और संतोष ऐसे दिव्यगुण हैं जिन्हें धारण करने से अन्य गुण स्वतः ही जीवन में आने लगते हैं। विश्व-बन्धुत्व की भावना हमारे सम्बंधों में मधुरता लाती है। जीवन के हर क्षेत्र में सम्बंध का बड़ा महत्व है। सम्बंध के आधार पर ही व्यक्ति का व्यवहार चलता है। पवित्रता, उपरामता एवं सहिष्णुता भी जीवन को नैतिकता से परिपूर्ण बनाने में बड़ा योगदान देते हैं। अतः वैज्ञानिकों एवं आध्यात्मवेत्ता को मिलकर विश्व को बेहतर बनाने के लिए विशेष योजना बनानी चाहिए। अंत में आपने एक प्रस्ताव पढ़ा और सर्व सम्मति से पारित हुआ।

कार्यक्रम का संचालन भ्राता मोहन सिंघल, अहमदाबाद ने किया। ब्रह्माकुमारी शशि बहन, माऊंट आबू ने योगाभ्यास कराया। बंगलौर के ब्रह्माकुमार बी.के. मरिअप्पा ने धन्यवाद दिया। □

कैथल: चित्र में शंकर सम्राट आध्यात्मिक साहित्य भेंट लेने के पश्चात् ब्र.कु. पुष्पा तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहिनों के साथ खड़े हैं।

"मिलन"

ब्र.कु. सूर्य, माऊंट आबू

हनुमंत प्रसाद और उनकी धर्मपत्नी चन्दन सुखपूर्वक गृहस्थ निर्वाह करते थे। प्रसाद जी दर्शन के प्रोफैसर थे और चन्दन भी शिक्षिका थी। उनका पुत्र धनन्जय पढ़कर इंजीनियर बना, उसका विवाह एक सुशील कन्या सरोजिनी से हुआ।

परन्तु प्रसाद जी की सर्विस के अंतिम दिनों में उनका चिड़चिड़ापन बढ़ने लगा, जैसा कि प्रायः वृद्धावस्था में शारीरिक व मानसिक शक्तियों के क्षय से होता है। अब घर में धनन्जय से उनका मनमुटाव होने लगा। लड़का काफी सहन करने की कोशिश करता, परन्तु पिता का आक्रोश उसके अहम् को जगाए बिना न रह पाता। और वह भी ऐसी बात कह जाता जो कि हनुमंत जी के जीवन को मानो अशान्ति की चिता पर चढ़ा देती।

चन्दन हनुमंत प्रसाद को अच्छी सीख देती, परन्तु ज्यों-ज्यों वह सीख देती, उनका मन और व्याकुल होता। वे रिटायर हो गए। अब वे सोकर देर से उठते, उनका जीवन सुस्त हो गया... और उठते ही धनन्जय से उसकी कहा-सुनी हो जाया करती। दिन बीतने लगे, घर में अशान्ति बढ़ने लगी। उधर सरोजिनी अच्छे कुल में जन्मी नारी थी, वह दोनों को समझाती, धनन्जय काफी शान्त रहने की कोशिश करता था। परन्तु कलियुग का प्रभाव और वृद्धावस्था के लक्षण, प्रसाद जी को अशान्त करते गए। अब स्थिति यहां तक पहुंची कि सुबह-शाम झगड़े होने लगे, पड़ोसियों तक आवाज जाती, मौहल्ला इकट्ठा हो जाता, कोई धनन्जय को समझाता और कोई प्रोफैसर साहब को। जो कभी सबको सीख देते थे, आज लोग उन पर हंसने लगे। समाज में बदनामी बढ़ने लगी। सरोजिनी लज्जा से कहीं बाहर भी नहीं जाती थी। वह हमेशा सोचा करती थी—मैं क्या उपाय करूं जो घर में शान्ति हो... न जाने ये कैसी ग्रहचारी है।

सरोजिनी व धनन्जय रोज मिलकर मंत्रणा करते कि कल मैं पूरी तरह शान्त रहूंगा। घर में धन-धान्य की तो कोई कमी न थी, परन्तु पिता के कटु वचन व धमकियां उसे बोलने पर विवश कर देतीं। अब प्रसाद जी को रिटायर हुए 3 वर्ष हो गए। परन्तु इतने थोड़े से समय में उनके घर का जीवन नर्क तुल्य बन गया, उन्हें चिंतावश कई बीमारियां भी लग गईं...।

बहुत परेशान हुए प्रसाद जी, फलस्वरूप उनकी नींद का सुख भी जाता रहा। उन्हें बहुत कम नींद आती, थोड़ी नींद में भी वे बड़बड़ाते, मानो किसी से लड़ रहे हों। बहुत अशान्ति बढ़ी, उनका दर्शन का सम्पूर्ण ज्ञान सूखा पड़ गया, उन्हें शान्ति के लाले पड़ गए। दिन-रात के झगड़ों ने मन वीरान बना दिया। परन्तु उन्हें यह न पता था कि इसके कारण वे स्वयं ही हैं, उनके विचारों की जटिलता ही है...।

परेशान होकर उन्होंने घर से निकल जाने का निर्णय लिया। क्योंकि अब अपने उसी धनन्जय को देखकर, जो उनकी आंखों का तारा था, उनके तन-मन में आग लग जाती थी। वे खाली हाथ चुपचाप चले किसी अज्ञात स्थान को, पहुंचे हरिद्वार... सोचा अब किसी आश्रम में रहकर शान्तमय जीवन बिताएंगे, क्योंकि दर्शन का पुट तो उनके पास था ही।

वे संन्यासियों के एक आश्रम में पहुंचे, वहां रहने की अनुमति उन्हें मिल गई। परन्तु वे दर्शन शास्त्र के ज्ञाता, जीवन के अनुभवी, अतः वहां भी टिक न पाए। आश्रम के संन्यासियों का जीवन उन्हें नीरस व साधना विहीन लगा। ज्ञान नाम की कोई चीज उनके पास न थी, उनका जीवन व्यसन ग्रस्त था। अतः यह सब देखकर, उनका मन वहां न लगा। आसमान से गिरे, पेड़ पर लटक गए—यही हाल हुआ उनका। वहां के वातावरण में भी कोई शान्ति न थी। अब उनके कदम चले वहां से बाहर, भटकन के मार्ग पर... उनका चित्त जो स्थिर न था...।

दूसरा आश्रम ढूंढा उन्होंने, वहां के गुरु अच्छे विद्वान् थे। दोनों में खूब बनी, खूब ज्ञान-चर्चाएं... और दर्शन पर गूढ़ व्याख्यान होने लगे। उन्होंने जीवन में एक बार फिर खुशी का अनुभव किया। वास्तव में कमी यह भी थी कि उनके ज्ञान-भंडार का कहीं उपयोग भी नहीं हो रहा था। इस प्रकार एक वर्ष बीता...।

उधर घर में खलबली मची। समाज ने न जाने क्या-क्या बोला? किसी ने कहा—इन्होंने प्रसाद जी को घर से निकाल दिया। न जाने बेचारे कहां मारे-मारे फिरते होंगे। किसी ने चुटकी ली—अरे भई, ये सब धन के लोभ में हुआ। ये सब प्रसाद जी का धन लूटना चाहते थे। किसी ने कहा—कितने सज्जन थे वे। ये सब-कुछ इस सरोजिनी ने कराया। किसी ने कुछ... किसी ने कुछ...।

अटपटी बातें सुन-सुनकर धनन्जय का मन विचलित हो उठा। अब उसे एहसास हुआ कि बहुत बुरा हुआ, मैंने भी गुस्से में पिताजी को फटकारा था, कहा था, निकल जाओ घर से...। ओह! घर के मालिक को मैंने यों दुत्कारा... मैं पापी... मैं क्रूर... मैं ऐसा कैसे बन गया... मुझे किसने श्रापित किया...। मुझे पिताजी को ढूंढना होगा। उसने पुलिस से सहायता मांगी, अखबारों में छपवाया, परन्तु प्रसाद जी की कहीं भी भनक न पड़ी।

चन्दन मां ने तो उसी दिन से खाट पकड़ ली थी। उसका जीवन अब अकेलेपन में मानो सुनसान हो गया। दिनोंदिन हालत गिरती गई और डेढ़ वर्ष में ही उसका प्राणान्त हो गया। यह मानो परिवार पर वज्रपात था। अब तो धनन्जय व सरोजिनी समाज में मुंह दिखाने लायक भी न रहे। कोई भी उनसे अच्छी बातें न

करता। इस तरह परिवार पूरी अशान्ति की जकड़ में आ गया।

उधर प्रसाद जी ने विधिवत् संन्यास ग्रहण कर लिया। उनकी वाचा शक्ति सब पर जादू करने लगी। गुरु जी भी उनको चाहने लगे। धीरे-धीरे उनकी विद्वता का प्रभाव समस्त आश्रमवासियों पर छा गया। उन्हें भी जीवन में पुनः खुशी व सम्मान प्राप्त हुआ। परन्तु भाग्य को यह मंजूर न था। किसी ने गुरु जी के कान भरे—ये नए स्वामी आपकी गद्दी हथिया लेंगे। गुरु ने भी उनके बढ़ते प्रभाव से ऐसा ही महसूस किया। अब रंग बदला, गुरु की दृष्टि बदली और एक बार फिर प्रसाद जी के संन्यासी जीवन का सुख जाता रहा। एक दिन गुरु ने उन पर झूठा दोष लगाकर उन्हें अपमानित करके आश्रम से निकाल दिया।

प्रसाद जी पर मानो आसमान गिर गया। धरती मानो उनके पैर तले से निकलने लगी। उनके कदम भारी हो गए। धीरे-धीरे वे गंगा के किनारे पहुंचे। बैठते ही आंखों से अविरल अश्रुधार बहने लगी। उन्हें बार-बार मलाल हो रहा था। गुरु ने मुझ निर्दोष पर दोष क्यों मढ़ा? उन्हें सूझ ही नहीं रहा था कि क्या करूं, मन मानो बेहोश हो गया था। मन कह रहा था—गंगा की पावन धारा में जीवन को समर्पित कर दो... परन्तु साहस न था। कभी उसे परिवार की याद आ रही थी और कभी आश्रम की घटनाओं की। कितना अच्छा था मेरा धनन्जय, काश! मैं उसे दूर से देख लूं... सरोजिनी तो देवी थी, चन्दन पता नहीं कैसी होगी... शायद परिवार की अशान्ति उसे छू रही थी। एक बार सबको याद करके, वह क्षण भर के लिए शान्त हो गया।

स्वयं को गंगा की धारा में समर्पित करने का प्रसाद का संकल्प दृढ़ होने लगा। विचार चले—गंगा की पावन धारा में मैं मुक्त हो जाऊंगा, गंगा जल का परम महत्व है। परन्तु मौत का भय उसे ऐसा नहीं करने दे रहा था। सोच-सोचकर उसने निर्णय लिया गंगा में कूदने का। और मुख से अंतिम बार कहा—

"हे प्रभु मेरी रक्षा करो, मैं तुम्हारे पास आ रहा हूं... अब तुम ही मेरा सहारा हो... मुझे अपनी शरण में ले लो..."

ज्यों ही उसने कूदना चाहा, किसी ने मानो उसे पकड़ा... और आवाज आई... नहीं, नहीं, ऐसा मत करो, भगवान् तुम्हें इसी जीवन में मिलेंगे...।

उन्होंने पीछे मुड़कर देखा, वहां कोई न था, परन्तु उनके कन्धे पर उन्हें किसी के हाथ होने का एहसास था।

वे रुके, उसे लगा, भगवान् उसे डूबने देना नहीं चाहते...। उन्होंने वहीं झोंपड़ी बना ली और योग-दर्शन के आधार पर योग साधना करने का संकल्प किया।

उसके विचार पुनः उसे शक्ति देने लगे। "मरना तो कायरता है", "अनमोल जीवन को नष्ट करना तो धूर्त्तता है", कुछ हुआ भी तो नहीं, ये तो मामूली घटनाएं हैं, मैं यों ही परेशान व निराश हो गया। अब साधना करूं, 6 वर्ष ही तो हुए हैं। मानो उसके जीवन पर छाए काले मेघ बिखरने लगे।

धनन्जय को दो बच्चे भी थे। बच्चों की रिमझिम घर की अशान्ति को कम करती थी। परन्तु मां की शोक-व्याकुल होकर मृत्यु ने और समाज की कटु आलोचना ने उनकी भी नींद हराम कर दी थी। दोनों शान्ति के लिए प्रतिदिन मंदिर जाने लगे। वहां उन्हें कुछ शान्ति मिलती। परन्तु मन बार-बार भूत की घटनाओं में भटककर परेशान हो उठता था।

धनन्जय याद किया करता था—पिताजी ने हमें कितना प्यार दिया था, सच्चे दिल से हमें पढ़ाया, हमारे लिए क्या नहीं किया... और उनके अन्तकाल में हम उनकी सेवा भी न कर सके। हम पितृ-ऋण से भी मुक्त नहीं हुए, पता नहीं वे जीवित हैं भी या नहीं, पता नहीं उनका अन्त कैसा हुआ होगा... पता नहीं वे कहां भटकते होंगे... यह सोच-सोचकर उसका दिल भर आता, न उसका ऑफिस में मन लगता, न घर में...।

सरोजिनी आदर्श नारी थी, वे पति को ढांढ़स बंधाती—"जो प्रभु को मंजूर था, वही हुआ, होनी को कोई टाल नहीं सकता, हमारे अच्छे कर्म हुए तो पिताजी पुनः हमें मिलेंगे, अवश्य मिलेंगे... मेरा मन कहता है वे हमें अवश्य मिलेंगे... हमें उनके लिए कुछ दान-पुण्य करना चाहिए, पिताजी को 7 वर्ष गए हो गए, हे प्रभु उन्हें शान्ति देना..."

राखी का त्यौहार आया, धनन्जय के घर ब्रह्माकुमारी बहनों का सन्देश आया कि बहनें आपको राखी बांधने आना चाहती हैं...

उसका मन भावुक हो उठा, उसने ब्रह्माकुमारियों का नाम सुना था, उसे कोई बहन भी न थी। उसने स्वीकृति दे दी।

अगले दिन, श्वेत वस्त्रधारिणी, दिव्य आभा से सुशोभित ब्रह्माकुमारी बहनों ने उनके घर में अपने पवित्र कदम रखे। उन्हें देखते ही दम्पत्ति को लगा मानो उनके घर में शान्ति की देवियों का पदार्पण हुआ हो, उन्हें देखते ही धनन्जय का मन शान्त हो गया, मानो सिर से कोई भारी बोझ उतर गया हो।

बहनों ने धनन्जय को, सरोजिनी को व दोनों बच्चों को भी राखी बांधी। धनन्जय को लगा कि इस राखी के बंधने से उसकी ग्रहचारी उतर गई हो, सरोजिनी का मन तो अति आनंदित हो गया था।

धनन्जय ने बहनों को कुछ भेंट देनी चाही। बहनों ने अस्वीकार करते हुए कहा—हमें तो 5 खोटे पैसे चाहिए, जिनके कारण जीवन परेशान है।

5 खोटे पैसे... क्या रहस्य है देवियों, इनका। बहन, मुझ जैसा अभागा व्यक्ति इस संसार में कोई नहीं। आपके चेहरों की शान्ति देखकर मन शान्त हो गया है। हमें शान्ति का मार्ग बताएं देवी, यह कहते हुए उसके नयन गीले हो गए।

बंधु, ये काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार ही 5 खोटे पैसे हैं, जो अशान्ति के कारण हैं। इन्हें राजयोग की अग्नि में भस्म करके ही परम शान्ति पाई जा सकती है—बहनों ने कहा।

तो हमें भी राजयोग सिखाइए—धनन्जय ने आग्रह किया।

इसके लिए आप दोनों प्रतिदिन हमारे आश्रम पर आकर क्लॉस करें। सात दिन में ही आपका जीवन पूर्णतया शान्त हो जाएगा।

धनन्जय ने अपनी सारी कहानी बहनों को सुनाई और राजयोग सीखने का संकल्प करके बहनों को सम्मानपूर्वक विदाई दी।

दोनों ने 7 दिन तक ज्ञान-योग का कोर्स किया। उन्हें आत्म-ज्ञान, परमात्म-ज्ञान, कर्मों की गहन गति का ज्ञान, विश्व-ड्रामा का ज्ञान और राजयोग का ज्ञान पूर्णतयाः प्राप्त हो गया। दोनों ने परमात्मा को साक्षी रखकर पवित्र जीवन जीने का व्रत लिया।

अब दिन बदले, जीवन से काले बादलों की परछाई हटी, शान्ति के सुगम पथ पर उनके कदम बढ़े। "सब-कुछ कल्याणकारी है"-इस ज्ञान ने उन्हें सच्ची राहत दी। "जो हो गया, उसे भूल जाओ, वही अटल था, वही होना था"—इस सत्य ने उन्हें धैर्य दिया। "नथिंग न्यू"—यह मंत्र उनकी खुशी का आधार बन गया। वे प्रतिदिन प्रातः 4.00 बजे उठकर योगाभ्यास करने लगे। घर में ही उन्होंने योग-कक्ष बनाया, भोजन पूर्णतया सात्विक किया। अब उनके घर में ईश्वरीय ज्ञान के गीत बजते रहते थे। अब घर सुन्दर शान्तमय आश्रम, शान्ति का केंद्र बन गया। इस तरह पूरा एक वर्ष बीता। उनका जीवन पूर्णरूपेण बदल चुका था।

उधर हनुमंत संन्यासी वेष में लम्बी-लम्बी दाढ़ी बढ़ाए, गंगा के तीर पर साधना कर रहा था। परन्तु उसका मन बार-बार भटकता था। क्षणिक एकाग्रता उन्हें होती थी। वे कभी-कभी जीवन से परेशान भी हो उठते थे।

परन्तु प्रतिदिन प्रातः 4.00 बजे उनकी आंखें स्वतः ही खुलती थीं। उन्हें परम शान्ति का अनुभव होता था... उन्हें धनन्जय की याद आती और उसकी याद से अब उसे सुख मिलता था। कारण को वे समझ नहीं पाते थे। कभी धनन्जय की याद उन्हें दुःखी किया करती थी, परन्तु अब धनन्जय की याद उन्हें शान्ति देने लगी। असफल साधना में उनका वर्ष बीता। घर छोड़े उन्हें आठवां वर्ष हो रहा था। न जाने उन्हें क्यों घर की याद रह-रहकर आती थी। वे सोचने लगे कि एक बार दूर से ही सभी बच्चों को देख आऊं...।

आखिर वे चले साधू वेष में, पुनः उसी घर की ओर... जहां वे कभी भी न आने का व्रत ले चुके थे। कई दिनों के बाद वे उस शहर में पहुंचे।

उसी दिन धनन्जय ने घर पर सामूहिक योगाभ्यास का कार्यक्रम रखा था। घर में सौ से भी अधिक श्वेत वस्त्रधारी ब्रह्मा वत्स आए हुए थे। मनोहर गीत बज रहे थे। सुगंधित अगरबत्तियों की महक ने वातावरण को आकर्षक बना दिया था। घर से मानो चारों ओर शान्ति के प्रकम्पन फैल रहे थे। शाम का समय था, सूर्य भी अपनी परिक्रमा पूर्ण करके विश्राम लेना चाहता था।

धीरे-धीरे साधू के कदम उसी ओर बढ़े। सकुचाई निगाहों से वह देख रहा था, कोई उसे पहचान तो नहीं रहा। सब वही मनुष्य दीखे, कुछ उन्हें हाथ जोड़कर प्रणाम कर रहे थे। कुछ ही क्षणों में वे पहुंचे अपने ही उस घर के बाहर, जहां उन्होंने जीवन के 40 वर्ष बिताए थे। सारी स्मृतियां जाग उठीं, नयन भर आए... वे किंकर्त्तव्यविमूढ़ से हो गए। उन्हें बाहर कोई भी नजर न आया, परन्तु वहां फैली शान्ति उन्हें बरबस खींच रही थी।

'क्या करूं'—जब उन्हें कुछ भी न सूझा तो उन्होंने अलख जगाई, "अलख निरंजन"। उनकी पहचानी-सी आवाज सुनकर सरोजिनी बाहर आई। श्वेत वस्त्रधारिणी सरोजिनी ने महात्मा को नमस्कार किया उनके चेहरे की दिव्यता देखकर प्रसाद जी आनंदित हो गए। वे बोली—धन्य भाग्य हमारे, आइए महात्मन् आप भी बड़े भाग्यशाली हैं, आइए अन्दर योग का प्रोग्राम चल रहा है, आप भी बैठिए।

वहां बैठते ही साधू का मन एकाग्र और शान्त हो गया। कुछ क्षणों के लिए वह सब-कुछ भूल गया। सभी ने उसे देखा, परन्तु धनन्जय भी व्यस्तता के कारण उन्हें पहचान न सका। योग पूर्ण हुआ। दीदी ने सरोजिनी व धनन्जय को स्टेज पर बुलाया।

दोनों के चेहरों की आभा देख संन्यासी भावुक हो उठा। वह मुश्किल से ही अपने को सम्भाल पाया।

धनन्जय बोला—इन बहनों ने मेरे अशान्ति से भरे जीवन को शान्त किया। मेरा बाप लड़कर घर से चला गया, मां तड़प-तड़पकर मर गई, हम बड़े परेशान थे, अपने दुर्भाग्य पर रोया करते थे। शिवबाबा हमें घर में ही आन मिले। ऋषि-मुनी जिसे ढूंढ-ढूंढकर हार गए, वह स्वयं चलकर हमारे पास आया। आज हम सबने यहां योग किया ताकि हमारे पूज्य मां-बाप को शान्ति मिले।

इतने में ही पीछे से जोर-जोर से रोने की आवाज आई। सबका ध्यान भंग हुआ। सबने देखा, संन्यासी बच्चों की तरह रो रहा है...।

सरोजिनी उठकर साधू के पास गई। बोली, रो क्यों रहे हो महात्मन्। ये तो सुखों की घड़ियां हैं।

साधू बोला—बेटी, मैं ही तुम्हारा बाप हनुमंत प्रसाद हूं। यह कहकर वह सरोजिनी के चरणों में गिर पड़ा और सिसक-सिसककर रोने लगा।

दौड़कर धनन्जय ने पिता को उठाकर गले से लगाया। उसके आंसू पौंछे। उसे अन्दर ले जाकर आसन पर बैठाया। यह मिलन देखकर सभी हर्ष व आश्चर्य से विभोर हो उठे। □

आप मुरली से प्यार करो तो मुरलीधर आपसे प्यार करेगा

□ ब्र.कु. जगरूप, कृष्णा नगर, दिल्ली

मिलिट्री की सर्विस के समय मुझे जब यह आदेश मिला कि आपको एक मास के लिए मंदिर में प्रात:काल 20–25 मिनट के लिए आरती करनी है और घंटी बजानी है, क्योंकि मंदिर के पंडित जी, जो आरती, कथा व रामायण का पाठ करते थे वो छुट्टी पर जा रहे हैं। मेरे कई दफा मना करने पर भी, न तो मैं कोई कथा जानता हूं ना रामायण आदि का पाठ, यहां तक कि मुझे तो आरती भी नहीं करनी आती, परन्तु फिर भी मुझे कहा गया कि आप शारीरिक जाति से शर्मा हैं इसलिए आपको यह ड्यूटी करनी है।

मैंने पूरी रात्रि बैठ आरती को याद किया और प्रात:काल जाकर आरती करने लगा और घंटी बजाने लगा। आरती को मैंने कागज़ पर लिख रखा था कि कहीं भूल न जाऊं और भगवान् नाराज़ न हो जायें। आरती करते समय मुझे संकल्प उठा कि मैं आरती के समय ध्यान किस भगवान् में लगाऊं। मंदिर में देवताओं की कई तस्वीरें थीं परन्तु मुझे श्रीकृष्ण और उसकी मुरली अच्छी लगी तो आरती के समय मैं एकटक श्रीकृष्ण और उसकी मुरली को देखता रहता। मुझे सिर्फ आरती करने और घंटी बजाने की ही ड्यूटी मिली थी इसलिए मैं जल्दी-जल्दी यह कार्य निपटा देता और कभी-कभी श्रीमद्भगवतगीता के पन्ने पलटने लगता। गीता के सिर्फ इन महावाक्य पर मैं विचार करता कि "हे अर्जुन, मैं अजन्मा अकर्त्ता अभोक्ता हूं।" कुछ समय सोच-सोचकर फिर छोड़ देता कि चलो हमें क्या लेना-देना है, चाहे वो अजन्मा, अकर्त्ता, अभोक्ता हो या न हो, हमें तो एक मास तक घंटी बजाकर और आरती कर भगवान् जी को खुश रखना है। एक मास के बाद पंडित जी छुट्टी से वापिस आए और मैंने घंटी उनके हवाले कर इस सेवा से निस्वृत्ति ली।

कुछ समय के पश्चात् मेरे भाग्य ने करवट ली, अचानक ही मुझे एक पुस्तक मिली जो प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय से संबंधित थी। पुस्तक के इन शब्दों ने मेरे जीवन का दूसरा अध्याय (सम्पूर्ण पवित्र जीवन) शुरू कर दिया कि "मैं अजन्मा, अकर्त्ता, अभोक्ता निराकार ज्योर्तिस्वरूप शिव हूं, मैं वर्तमान धर्मग्लानि के समय प्रजापिता ब्रह्मा के तन में प्रवेश कर सभी वेदों-शास्त्रों का सार सुना रहा हूं, जिसको ही मुरली कहा जाता है। जिसको सुनने वाले गोपी वल्लभ की गोप-गोपियां कहलाती हैं।" पुस्तक के एक-एक शब्द द्वारा सम्पूर्ण ईश्वरीय ज्ञान कि मैं कौन हूं, कहां से आया हूं, सर्वात्माओं के पिता कौन हैं, सृष्टि का आदि, मध्य, अन्त क्या है और वर्तमान कलियुग का अन्त और सतयुग की आदि का समय पुरुषोत्तम संगमयुग चल रहा है—इन सभी तथ्यों को समझ आखिर जब मेरी मुलाकात मुरलीधर (परमात्मा शिव) से हुई और उनकी मुरली (महावाक्य) के मधुर स्वर मेरे कानों में पड़े तो मैं एक ऐसे अलौकिक सुख की अनुभूति करने लगा जिनका शब्दों में वर्णन नहीं हो सकता। परन्तु शास्त्रों में गायन है कि अतीन्द्रिय सुख पूछना हो तो गोपी वल्लभ की गोप-गोपियों से पूछो। मैंने अनेक गोप-गोपियों (बहन-भाईयों) को, मुरली चलाते हुए मुरलीधर के सामने मस्ती से झूमते हुए देखा, रूहानी नशे में देखा, ईश्वरीय खुमारी में देखा, मधुबन में मुरली बाजे—इस गायन को अपनी आंखों से जब देखा तो मुझ आत्मा की दिल से आवाज निकली कि वाह मेरा भाग्य! वाह इन आत्माओं का भाग्य जिनको स्वयं मुरलीधर अनेक मधुर स्वरों में मुरली सुना रहा हो, विस्मृत हुई गोप-गोपियां को स्वयं गोपी वल्लभ स्मृति दिला रहा हो कि हे मेरे सिकीलधे बच्चे, हे मेरे नूरे रत्नो, आप वही कल्प पहले वाले गोप-गोपियां हो, पांडव शिव शक्ति सेना हो, होवनहार डबल ताजधारी देवता हो!

चारों युगों में सब-कुछ मिल सकता है, सतयुग, त्रेतायुग में सर्वगुण सम्पन्न 16 कला सम्पूर्ण जीवन भी होगा परन्तु मुरलीधर और मुरली की प्राप्ति सारे कल्प में सिर्फ अभी हो सकती है, अभी नहीं तो कल्प-कल्पान्त्र नहीं हो सकती। शास्त्रों में जो गायन है कि गोप-गोपियां मुरली के बिना तड़पती थीं वो गायन अभी संगमयुग का है। जिस गायन योग्य आत्माओं के गायन को याद करके भगत अपने को भाग्यशाली समझते हैं। सारे कल्प में हमें इन्सानों की बातें सुनने को मिलेंगी परन्तु भगवान् की बातें, भगवान् की मुरली (महावाक्य) सिर्फ संगम पर ही मिल सकती है। मानव जीवन में मानव का अन्तिम लक्षय यही होता है कि भगवान् से मिलन हो जाए या स्वयं भगवान् हमें दो शब्द हमारे कानों में सुना दें, परन्तु जिनको स्वयं भगवान् अपनी नजरों के सामने बिठा करके मुरली सुनाता हो, उन आत्माओं का मुरली से कितना प्यार होना चाहिए। क्योंकि मुरली से प्यार ही मुरलीधर के प्यार को सिद्ध करता है। मुरली से हमारी अटूट मुहब्बत हो जाए इसके लिए मुरली के समय हम यह सोचें:—

- मुरलीधर सिर्फ मेरे लिए शिक्षक बन मुझे ही मुरली सुनाने परमधाम से आया है ।
- मुरली सुनने के लिए कोटों में कोऊ और कोऊ में से भी कोऊ मुझ आत्मा को चुना है ।
- मेरा समय से पहले पहुंचकर और उदासी-उबासी और निंद्रा से परे रह चात्रिक की तरह मुरली सुनना ही मुरलीधर का सम्मान करना है ।
- मुरलीधर, मुरली में मुझ आत्मा के लिए भोजन, मुझ आत्मा का श्रृंगार करने, माया से युद्ध करने के लिए मुझ आत्मा को अनेक अस्त्र-शस्त्र देने, ज्ञान, गुण व शक्तियों रूपी खजाने लेकर आया है ।
- मेरी हर समस्या व विघ्न का समाधान करने मुरलीधर, मुरली में बताने आया है ।
- मेरे चारों विषयों (ज्ञान, योग, धारणा, सेवा) का संतुलन मुरलीधर की मुरली से ही होगा ।

उपरोक्त स्मृतियों के साथ-साथ अगर हम प्रातः चार बजे से आठ बजे तक व्यर्थ चिन्तन व आपस में फालतू बातचीत में न आकर अन्तर्मुखता के गुण को धारण कर सिर्फ मुरलीधर की महिमा और मुरली (ज्ञान) का ही मनन करें तो हम अतीन्द्रिय सुख की निरंतर अनुभूति कर सकते हैं, क्योंकि संगमयुग का वर्सा है ही अतीन्द्रिय सुख । जैसे सागर का आनन्द सागर की लहरों से लिया जाता है वैसे मुरलीधर का प्यार व आनन्द मुरलीधर की मुरली द्वारा ही मिलता है लेकिन सिर्फ यह सदा याद रहे कि अगर मैं मुरली से प्यार करूंगा तो मुरलीधर मेरे से प्यार करेगा । □

भिलाई नगर: नवरात्रि पर्व पर चैतन्य दुर्गा की झांकी का उद्घाटन करते हुए विधायक भ्राता रवि आर्या जी ।

दिल्ली-शाहदरा: आध्यात्मिक स्नेह-मिलन के पश्चात् भ्राता बाबू राम शर्मा अध्यक्ष पूर्वी दिल्ली कांग्रेस (आई) तथा अन्य कांग्रेस के नेतागण, ब्र.कु. प्रेम के साथ ग्रुप फोटो में दिखाई दे रहे हैं ।

ब्र.कु. चक्रधारी तथा डॉ. ऊषा किरन लेनिन ग्राड में कार्यक्रम के पश्चात् युवा ग्रुप के साथ ।

खंडवा: बैंक कॉलोनी महिला सभा की अध्यक्षा व अन्य सदस्यगण प्रदर्शनी देखने के पश्चात् ब्र.कु. हंसा एवं समिता के साथ ।

"एकाग्रता परिवर्तनकारी शक्ति है"

आज हम जिस संसार में रह रहे हैं, यह प्रतियोगिता से भरपूर है। चारों तरफ कुछ पाने की, कुछ करने की दौड़-सी दिखाई देती है। इसमें मुख्य रूप से धन, सत्ता या नाम की प्राप्ति की होड़ लगी हुई है। परन्तु विवेक कहता है—यह प्राप्तियां अल्पकालिक हैं। इन सभी प्राप्तियों का आधार मानव मन है, उसकी मानसिक शक्तियाँ हैं जिसे आत्मिक-बल भी कह सकते हैं। और यह तो सर्वविदित है,सभी प्रकार की आन्तरिक या बाह्य शक्तियों की जननी है एकाग्रता। आज हम इसी पर विचार करेंगे।

एकाग्रता की शक्ति हर मानव में गुप्त और सुषुप्त है। जो इसको अनुभव कर लेता है वह महान् उपलब्धियां पाता है। इसलिए कहा जाता है संकल्प-शक्ति चमत्कारिक है। यह मानव की निजी शक्ति है, उसके अन्तर्मन का सामर्थ्य है। इसलिए इसका महत्त्व तभी से है जब से मानव है। प्राचीन काल में इसी शक्ति से वरदान या श्राप जैसी विचित्र घटनाएं होने का गायन है। ऋषि-मुनि इसी शक्ति से अनेक प्रकार के संताप नाश करते थे। वर्तमान समय में भौतिक या आध्यात्मिक क्षेत्र में जो भी उपलब्धियां रही हैं उनका आधार मन का स्थिर लक्ष्य ही है। कोई नई खोज करने वाला एक ही लक्ष्य को लेकर उससे सम्बन्धित पदार्थों और विषयों में खोया रहता है। जिसने कोई पुस्तक लिखनी हो उसकी बुद्धि एक ही विषय (Theme) के इर्द-गिर्द घूमती रहती है। भूत, भविष्य की बातें इसी आधार पर बताई जाती हैं क्योंकि स्थिरता से स्पष्टता आती हैं। जैसे समुद्र के पानी में स्थिरता है तभी परछाई दिखाई देती। इसी प्रकार मन रूपी सागर में विचारों की स्थिरता होने से बुद्धि सभी कुछ देखने-जानने में सक्षम हो जाती हैं।

एकाग्रता अर्थात् एक+अग्रता। एक के आगे रहना। यह हमें एक का महत्त्व दर्शाती है। संसार की परमशक्ति, रचना शक्ति परमात्मा पिता एक हैं। भक्ति में एक ईष्ट की अटूट भक्ति, जिसे नौधा भक्ति कहते हैं, से साक्षात्कार होता है। लौकिक दुनिया में भी एक से जुड़े रहने का महत्त्व है। घड़ी-घड़ी स्थान और लक्ष्य को बदलने वाले के प्रति इतना सम्मान भाव नहीं रहता, उसे स्थिर और विश्वसनीय नहीं माना जाता। पढ़ने वाले एक ही लक्ष्य को लेकर चलते तो पद की प्राप्ति करते। अतः एक से सम्बन्ध जोड़े रखना, एकाग्र होना प्राप्ति का हकदार बनाता है।

परमात्मा पिता शिव के शब्दों में एकाग्रता का अर्थ "एक निश्चित और शक्तिशाली संकल्प में स्थित होना"। हम जानते हैं संकल्पों का उद्गम स्थल मन है और मन आत्मा की एक अति सूक्ष्म शक्ति है। आत्मा पहले-पहले इस धरती पर जब पार्ट बजाने आती है तो यह एक साफ स्लेट की भाँति होती है जिस पर हर संकल्प का निशान पड़ता जाता है। जैसे स्लेट पर अलग-अलग लाइने लगाओ तो वह सारी स्लेट लाइनों से भर जाएगी पर लाइनें स्पष्ट नहीं होंगी और मिट भी जल्दी जाएँगी। इसके विपरित एक ही स्थान पर लाइन को चॉक से रगड़ते रहें तो लाइन पक्की हो जायेगी और सहज मिट भी नहीं पाएगी। इसी प्रकार यदि मन के संकल्प घड़ी- घड़ी परिवर्तनशील हैं तो भले ही मन अनेक संकल्पों से भरा होगा पर उनमें से एक भी दृढ़ और टिकाऊ नहीं होगा। परन्तु निश्चित लक्ष्य को लेकर बार-बार किया गया एक संकल्प वाणी और कर्म में परिलक्षित होता है।

अज्ञान काल में इसी दृढ़ संकल्प के कारण मनुष्य अनेक प्रकार के गलत कार्यों में लिप्त हो जाता है। उदाहरण के लिए किसी ने किसी से बदला लेना हो तो वह रात दिन एक ही संकल्प में रहता और आत्मा पर प्रभाव पक्का होता जाता और एक दिन व्यावहारिक तौर पर बात हमारे सामने आ जाती है। इसी प्रकार महान् उपलब्धियाँ भी दृढ़ संकल्प से होतीं। जैसे महात्मा गांधी ने बचपन से ही दृढ़ संकल्प लिया देश को अंग्रेज़ो से मुक्त कराने का और यही दृढ़ता की शक्ति अनुकूल परिस्थितियाँ पाकर साकार हो उठीं।

कई बार यह सुनने में आता है कि हमने सोचा तो बहुत कुछ था पर कुछ हुआ नहीं, कुछ बन नहीं पाया। इसका कारण है मनुष्य निश्चित संकल्प को लेकर नहीं चलता है। उसका मन अनेक प्रकार के आकर्षण और विकर्षणों के बीच झूलता रहता है। कभी एक व्यक्ति के प्रभाव में आता,कभी दूसरे का कायल हो जाता। अपनी धारणाओं को घड़ी-घड़ी मोड़ देता रहता, इसलिए उसके मन में संकल्प अनेक होते हैं पर निश्चित एक भी नहीं होता। इन्हीं तुलना, अनुमान, खिचाव, तनाव, आदि भिन्न-भिन्न प्रकार के संकल्पों में उसके मन को शान्ति और एकाग्रता नहीं मिलती। जैसे झूले में झूलना एक आनन्ददायी स्थिति है। परन्तु झोंटा एक समान और एक दिशा में दिया जाना चाहिए। यदि एक दिशा के बजाए ऊपर नीचे दाएँ, बाएँ, तेज़, मन्दा हो जाए तो उससे सारा शरीर हिल जाता है। मन में अज्ञात आशंका भी बनी रहती है कि पता नहीं अब कौनसा झोंटा आ जाए। इस प्रकार आनन्द के बजाए वह दुःखदाई स्थिति बना जाती है। मन के संकल्पों का मज़ा जिसे अतीन्द्रिय सुख भी कहा जा सकता है, तभी तक है जब वह

सकारात्मक और एकरस है। नहीं तों झूले के हिचकोलों की तरह उसे बेचैन कर देते हैं। सुख देने वाली चीज का सही उपयोग न करने के कारण ही सुख देने वाली चीज बन्धन बन जाती है। जैसे कि आज,मनुष्य सबसे ज्यादा परेशान अपने मन से ही हैं। वह चाहता है मन मर जाए, मन को दबा दिया जाए। पर प्राकृतिक वस्तु को या उसके स्वाभाविक गुण को दबाया या मिटाया नहीं जा सकता है, हां, उसे बदला जा सकता है। जैसे धन का शास्त्र–अर्थशास्त्र धन का सही उपयोग सिखाता है। इसी प्रकार सर्वोच्च मनोवैज्ञानिक परमात्मा पिता मन की शक्तियों का सही उपयोग करना सिखाते और विश्वकल्याण में उन्हें लगाते।

मन की एकाग्रता से विश्व-परिवर्तन का कार्य

हम जानते हैं यह संसार बड़े Systematic तरीके से बना हुआ है। इसमें हर वस्तु के बनने और बिगड़ने के पीछे एक ला (Law) है। जिस चीज को जिस चीज से बिगाड़ा गया है उसी से सुधारना भी होता है। **यह संसार सुन्दर और पावन था परन्तु मनुष्य के दूषित मन, वचन, कर्म ने इसे प्रदूषित कर दिया, जिस-जिस मात्रा में जिस-जिस आत्मा ने मन वाणी, कर्म से इसे दूषित किया उतनी मात्रा में अपनी इन शक्तियों को पावन बनाने में लगाना ही होगा। तभी वह आत्मा कर्मों के बोझ से रहित हो पाएगी।** तभी यह कहावत भी है कि धरती का हमारे पर ऋण है। यह ऋण वास्तव में हमारे कर्मों का है, जिससे हमको उऋण होना है। अब तक वाणी से, कर्म से व्यक्ति परिवर्तन होता रहा है परन्तु मन से मन को बदलने की क्रिया अति तीव्र और सफलतापूर्वक हो सकती है। यह तभी हो सकता है जब मन स्थिर हो।

मन को स्थिर करने के लिए परमात्मा पिता ने हमको आत्म-अभिमानी बनने की शिक्षा दी है जिसके आधार पर सर्व बिखरे हुए विचारों को समेटकर हम स्व (आत्मा) पर ध्यान केन्द्रित करते हैं। जब स्वयं को जान जाते हैं तो दूसरों की स्व (आत्मा) को जान सकते हैं, उससे बातचीत कर सकते हैं क्योंकि समान को समान का आकर्षण होता है। उदाहरण के लिए दो व्यक्ति पूर्ण रूपेण किसी कपड़े से ढके पड़े हैं। दोनों को ही एक दो की उपस्थिति का ज्ञान नहीं है तो मनुष्य-मनुष्य के बीच जो स्नेह युक्त, विश्वासयुक्त बातचीत होनी चाहिए वह नहीं हो पाती। भावनाओं का, विचारों का आदान-प्रदान नहीं हो पाता।इसी प्रकार आत्मा चेतन की शक्तियाँ शरीरों से ढकी हुई हैं। हमें उनकी पहचान नहीं थी इसलिए आत्मा के साथ आदान-प्रदान (Communicate) करना सम्भव नहीं था। आत्माभिमानी स्थिति में स्वयं की देह रूपी पर्दा उठाकर बौद्धिक शक्ति से अन्य सभी आत्माओं को देह से न्यारा बिन्दु रूप अनुभव कर सकते हैं,उनसे बातचीत करने में सक्षम हो सकते हैं। उन्हें जो चाहे सन्देश दे सकते हैं और अनुभूति करा सकते हैं। इस प्रकार मन की एकाग्रता और निश्चित लक्ष्य से अन्य मनुष्य आत्माओं को परिवर्तन किया जा सकता है।

हम जानते हैं मन के ऊपर अनेक जन्मों के संस्कारों की छाप है। राजयोगके अभ्यास से यह पुरानी छाप मिटती जाती है और निश्चित संकल्पों का हम अभ्यास करते हैं,उनकी छाप लगती जाती है। जैसे राजयोग में हम अभ्यास करते है "मैं शरीर से भिन्न शुद्ध चेतन आत्मा हूँ" इससे मैं सुन्दर हूँ, धनवान हूँ, पुत्रवान हूँ, गुणवान हूँ या अन्य इस प्रकार की अहम भावनाएँ मिट जाती हैं। इसी प्रकार यह संकल्प कि हम आत्मा रूप में भाई-भाई हैं इससे दूसरों के प्रति भाव–जैसे यह ऐसा है, वह वैसा है, यह ऊँचा है, वह नीचा है, आदि समाप्त होते जातेहै। 'भगवान मेरा है'इस संकल्प से सभी प्रकार के मेरे-पन जैसे–धन, सम्बन्ध, मित्र, फालोअर आदि से मुक्त हो जाते। "स्वर्ग की बादशाही मेरी है" यह भावना पुरानी दुनिया के सभी वैभवों, पदार्थों, से मेरापन मिटाती है। इस प्रकार आत्मा की संकल्प शक्ति से व्यर्थ संकल्पों का महाजाल हटता जाता है–सुन्दर और पवित्र संकल्पों के आनन्द में मन झूलता रहता है। जितना ज्यादा झूलता है, उतनी यह सकारात्मक भावनाएं पक्की होती जाती और एक दिन हमारा निजि संस्कार बन जाता है।

अत: एकाग्रता की शक्ति हम सभी के लिए वरदान है। मन-इच्छित फल देने वाली है। हम सभी इसके अभ्यास से गुप्त सुषुप्त शक्तियों को जागृत कर मनोनुकूल प्राप्ति कर सकते हैं। तो आइये आज से ही इसका अभ्यास बढ़ाएँ। ■

दौड़ते हुए मन रूपी घोड़े पर, वही सवार ठहर सकता है, जो सजग है।

जगदीश चन्द हसीजा, मुख्य सम्पादक, ब्र० कु० आत्म प्रकाश, सम्पादक, बी ९/१९ कृष्णानगर, दिल्ली द्वारा
सम्पादन तथा ओम शान्ति प्रैस, कृष्णानगर, देहली-५१ से छपवाया Regd No. 10563/65-D. (E)—70